श्रीमती दीपिका पाण्डेय सिंह
माननीय मंत्री
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग,
झारखण्ड

कृषि , पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
झारखण्ड

श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री
झारखण्ड

सफलता की कहानी

राज्य स्तरीय कृषि प्रबंधन प्रसार-सह-प्रशिक्षण संस्थान (समेति), झारखण्ड

समेति भवन, काँके रोड, राँची-834008, झारखण्ड

Web : www.sameti.org, E-mail : sametijharkhand@rediffmail.com

श्रीमती दीपिका पाण्डेय सिंह
माननीय मंत्री
ड्डषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग,
झारखण्ड, राँची

संदेश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हो रही है कि राज्य स्तरीय कृषि प्रबंधन प्रसार–सह–प्रशिक्षण संस्थान (समेति), झारखण्ड के द्वारा ''सफलता की कहानी'' पुस्तिका संकलन किया जा रहा है। यह पुस्तिका झारखण्ड राज्य के सभी किसान भाई–बहनों के लिए प्रेरणादायक और लाभकारी साबित होगी।

हमारे ऐसे किसान जो तकनीक और जानकारी के अभाव में पीछे रह जाते हैं, नई तकनीकों को अपनाने में संकोच करते है। ऐसे, किसान जब अपने ही किसान भाई की सफलता की कहानी से रू–ब–रू होंगे, तो इन्हें नई उमंग और जोश मिलेगा।

मैं आशा करती हूँ कि ''सफलता की कहानी'' पुस्तिका राज्य के सभी किसानों के लिए प्रेरणास्रोत साबित होगी। आप सभी सफल किसान बनें, आपकी कहानी भी अन्य किसानों के लिए अनुकरणीय हो। आपकी सफलता कृषि के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी कीर्तिमान स्थापित कर सकें।

शुभकामनाओं सहित!

(दीपिका पाण्डेय सिंह)

अबुबक्कर सिद्दीख पी0
सचिव, भा०प्र०से०
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग,
झारखण्ड, राँची

संदेश

समेति, झारखण्ड, के द्वारा राज्य के किसानों के सफलता की कहानी संकलित करते हुए एक पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है।

राज्य की बढ़ती आबादी एवं खेती हेतु सीमित भूमि/संसाधन, खाद्यान एवं पोषण सुरक्षा हेतु चुनौती का विषय है, परन्तु सीमित संसाधन में ही कुछ ऐसे प्रगतिशील किसान विभागीय कृषि अधिकारियों एवं प्रसार कर्मियों के सहयोग से उन्नत कृषि तकनीक को अपनाकर अपने क्षेत्र के किसानों के मध्य एक रॉल मॉडल के रूप में उभरते हैं। उनकी सफलता अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बन सकती है।

ऐसी प्रेरणादायक कहानी का प्रभाव सीमित किसान तक ही ना रह जाए, इसलिए प्रगतिशील किसानों के "सफलता की कहानी" पुस्तिका के माध्यम से अन्य किसानों तक प्रचार–प्रसार कर यह मील का पत्थर साबित होगी।

आशा है, कि "सफलता की कहानी" पुस्तिका राज्य के बिरसा किसान भाई–बहनों के कृषि की उन्नत तकनीक और विकास में इन उदाहरणों का अनुकरण कर एक नया आयाम स्थापित करेंगे।

शुभकामनाओं सहित!

(अबुबक्कर सिद्दीख पी0)

श्री विकास कुमार
निदेशक, समेति
झारखण्ड, राँची

संदेश

मुझे यह बताते हुये अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राज्य स्तरीय कृषि प्रबंधन प्रसार–सह–प्रशिक्षण संस्थान (समेति) झारखण्ड के द्वारा हर जिले के प्रगतिशील किसानों की कहानी को संकलन कर ''सफलता की कहानी'' समर्पित की जा रही है।

राज्य के कृषि परिदृश्य में बदलाव के लिए समेति झारखण्ड, लगातार प्रयासरत है। समेति के मार्गदर्शन में राज्य की आत्मा इकाई कृषि एवं सम्बद्ध प्रभाग के समेकित समन्वय सहयोग से किसानोपयोगी गतिविधियों से लाभान्वित होकर किसान आज खुशहाल हो रहे हैं।

जो किसान कृषि के क्षेत्र में नई तकनीकी से अनभिज्ञ रहने के कारण पीछे रह गए है। मैं चाहूंगा कि इस सकारात्मक कहानी के जरिए अन्य किसानों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े। आप भी अपने गांव, अपने क्षेत्र के लिए रॉल मॉडल बने। आपकी कहानी भी एक दिन आपके क्षेत्र के लिए अनुकरणीय हो।

मैं आशा करता हूँ ''सफलता की कहानी'' आपको उर्जावान और प्रेरणादायक बनाने में सफल साबित होगी। आप सफल किसान बनेगें।

शुभकामनाओं सहित!

(विकास कुमार)

डॉ0 कुमार ताराचन्द, भा0प्र0से0
कृषि निदेशक,
झारखण्ड, राँची

संदेश

मुझे हर्ष है कि, समेति, झारखंड के द्वारा संकलित पुस्तिका ''सफलता की कहानी'' का प्रकाशन झारखंड राज्य के किसानों के प्रेरणा एवं तकनीकी मार्गदर्शन हेतु प्रकाशन किया जा रहा है।

राज्य की कृषि विकास को नई दिशा और गति प्रदान करने के लिए हमारे सभी पदाधिकारी/प्रसार कर्मी सतत् प्रत्यनशील है। मानसून की अनिश्चितता एवं जलवायु परिवर्तन की चुनौती के बावजूद झारखंड किसान उन्नत कृषि की ओर अग्रसर है। इनकी सफलता अन्य किसान, जो आज भी तकनीक में पिछड़े हैं, उनके लिए संकलन एक मार्गदर्शन का कार्य करेगी।

केंद्र और राज्य सरकार किसानों की समस्याओं और जरूरतों और प्राथमिकताओं के प्रति सतत् संवेदनशील है और उन्हें सामाजिक, आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए हर संभव प्रयासरत है।

किसानों की परिस्थितियों और आर्थिक क्षमताओं के अंतर्गत बेहतर परिणाम देने हेतु कृषि तकनीक को विकसित और प्रसारित करने की आवश्यकता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है, कि हमारें राज्य के किसान सफलता की कहानी से प्रेरित होकर उन्नत कृषि और उन्नति करेंगे। आपके सहयोग के लिए हमारे सभी पदाधिकारी एवं प्रसार कर्मी सदा आपके साथ रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(कुमार ताराचन्द)

अनुक्रमणिका

क्रम	विवरणी	पृष्ठ
1	मेहनत ही सफलता की कुंजी, श्री विनय कुमार दांगी	
2	नई तकनीक से मुनाफा, श्री शंकर प्रसाद यादव	
3	महिला किसान की जुबानी, श्रीमती मंजु देवी	
4	एकता में ही बल है , श्रीमती उषा देवी	
5	छोटे प्रयास से मिली प्रतिष्ठा, सिद्दीक अंसारी	
6	श्री विधि से दोगुनी उपज संभव , श्रीमती जयन्ती देवी	
7	खेती के साथ पशुपालन भी आय का विकल्प , श्रीमती बेला सोरेन	
8	मेहनत किसी का मोहताज नहीं , श्रीमती काजल गोराई	
9	कम लागत ज्यादा मुनाफा , श्री यदुनाथ गोराई	
10	नया दौर नया अंदाज , श्री अयोध्या मेहता	
11	हौसले ने बदल दी तकदीर , श्री अशोक कुमार वर्मा	
12	आत्मा से जुड़ाव जीवन में बदलाव, श्रीमती सुशाना मरांडी	
13	कृषक पाठशाला एक वरदान, श्री दिनकर सिंह	
14	छोटी सी बदलाव, श्री प्रेमचंद यादव	
15	नई शुरूआत, श्रीमती कलिता देवी	
16	समय सबसे अच्छा दोस्त, श्री उदय माझी	
17	प्रयास और सफलता, श्री अशोक मंडल	
18	सपने हुए साकार, श्रीमती संजु देवी	
19	छोटा प्रयास, बड़ा परिर्वतन, श्री राजेन्द्र उराँव	
20	सच्ची मेहनत से मिली कामयाबी, श्रीमती एमलेन वागे	
21	एकता में ही बल है, श्रीमती शांति बाड़ा	
22	बेहतर से बेहतर की तलाश, श्रीमती सोफी कुजुर	
23	महिला किसान का आत्मविश्वास, श्रीमती जया देवी	
24	चना ने बढ़ाई, किसान विनोद बैठा की कमाई, श्रीमती विनोद बैठा	
25	दलहन की खेती से आयी हरियाली, श्रीमती गोहरी देवी	
26	समेकित कृषि से किसान बना आत्मनिर्भर, श्री निर्मल प्रसाद	
27	नई तकनीक से किसान खुशहाल, श्री जगरनाथ महतो	
28	ईमानदारी से की गई मेहनत कभी बेकार नहीं जाती, श्रीमती कविता देवी	
29	उन्नत खेती ने दिलाई पहचान, श्रीमती शबनम लकड़ा	
30	जलडेगा के किसान की कहानी, श्री राजेन्द्र काशी	
31	जरबेरा की खेती से बदली जिंदगी, श्री तेंबा उराँव	
32	कृषक पाठशाला ने सिखाई ब्रोकली की खेती, श्री विश्वनाथ महतो	

मेहनत ही सफलता की कुंजी

किसान का नाम	श्री विनय कुमार दाँगी
पिता / पति का नाम	श्री देवलाल दांगी
ग्राम	बेलहर
पंचायत	बरवाडीह
प्रखण्ड	पत्थलगड़ा
जिला	चतरा
जमीन का ब्यौरा	05 एकड
सिंचित	03 एकड
असिंचित	02 एकड
मोबाईल नं०	9431524356
क्या आप SHG / Producers Cooperative / Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	नहीं
किसान किस योजना (Central Sector / State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	(2018), NFSM Pulses, ATMA(Veg. Demo.) ATMA | & OTHER SEED

मैं विनय कुमार दाँगी, पिता श्री देवलाल दाँगी, ग्राम बेलहर, पंचायत बराडीह प्रखण्ड– पत्थलगडा का रहने वाला किसान हूँ। आत्मा के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ मुझे प्राप्त हुआ और मैं विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण में भाग लिया जिससे खेती में असीम परिर्वतन कर पाया जिसका परिणाम हुआ कि पहले हम खेती करते थे, लेकिन उत्पादन पूरा नहीं हो पाता था। वर्ष में किसी खेत में एक या दो फसल लगा पाता था। आत्मा के प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के द्वारा मेरे गांव में आत्मा द्वारा संचालित होने वाली किसान गोष्ठी के माध्यम से बताया गया कि हम जो खेती करते हैं उस खेती में थोड़ा बहुत परिवर्तन कर के उसी खेत में अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए फसल चक्र को अपनाना, संतुलित उर्वरक का प्रयोग, मिट्टी जांच, कीटनाशक, पंक्तिबद्ध बोआई तथा बीजोपचार करके बीज का बोआई करना। इस गोष्ठी से हमने सीखा कि हम खेती कर रहे हैं लेकिन उसी खेती की प्रणाली में कुछ विधियाँ छूट जाने से काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। तब से मैंने अपने खेतों में सभी वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करते हुए खेती किया, जिसके फलस्वरूप हमने पाया कि खेती की लागत में कमी आई तथा उत्पादन में वृद्धि हुई।

अब हम सभी किसान अपने खेतों की मिट्टी जांच करवाकर उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं। हम और हमारे सहयोगी किसान आत्मा के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं और अपनी खेती में लगातार सुधार करते हुए उत्पादन में वृद्धि के साथ पूरे वर्ष खेती कर रहे हैं।

मैं आत्मा के तत्वाधान में रांची में दिये जाने वाले

प्रशिक्षण मे समय–समय पर भाग लिया, जिसके द्वारा भी खेती की विभिन्न पद्धतियों की जानकारी प्राप्त हुई और आगे भी प्रशिक्षण में जाने के लिए हम और हमारे किसान तैयार रहते है। आत्मा के द्वारा लगाये जाने वाली प्रखण्ड स्तरीय और जिला स्तरीय किसान मेला में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा कई बेहतर उत्पादों को मेले में प्रदर्शित कर पुरस्कार प्राप्त किया। फसल अवशेष को खेत में सड़ाकर कम्पोस्ट बनाकर खेत में प्रयोग किया जा रहा है। जिससे खेतों में मिट्टी की उर्वरता सुरक्षित और संरक्षित रहती है। इस प्रकार आत्मा द्वारा चलाई जाने वाली प्रशिक्षण, परिभ्रमण और प्रत्यक्षण मुख्य कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेकर अपने खेत में वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग कर उत्पादन लागत में कमी ला पाया हूँ तथा उत्पादन में वृद्धि हुआ है। कृषि विज्ञान केन्द्र, चतरा और आत्मा के सहयोग से वैज्ञानिक अर्न्तमिलन कार्यक्रम के अन्तर्गत गाँव में वैज्ञानिकों के द्वारा किसानों को कीट व रोग संबंधित प्रशिक्षण स–समय दिया जाता है, जिसका लाभ हम सभी किसानों को प्राप्त होता है।

इस प्रकार आत्मा के सम्पर्क में आने से पूर्व में जो खेती कर रहा था उसमें छोटी–छोटी कमियाँ रह जाने के कारण लागत ज्यादा लगता था हम परेशान भी रहते थे और उत्पादन इतना होता था कि लागत भी सही से नहीं निकल पाता था। आत्मा के सम्पर्क में आने के बाद मेरे अंदर काफी परिवर्तन हुआ जिससे अपने खेती में परिवर्तन लाया तथा वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल कर खेती लागत को कम किया जिसके फलस्वरूप उत्पादन अच्छा प्राप्त हुआ अब मैं अपने अनाज को बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहा हूँ, इससे हम तथा हमारा परिवार काफी अच्छे ढंग से जीवन–यापन कर रहा है। आत्मा का हम तथा हमारा परिवार हमेशा धन्यवाद करता है कि इसकी गतिविधियों से प्राप्त जानकारी के अनुसार अपने और खेती में परिर्वतन कर पाया और आज मैं एक सफल प्रगतिशील किसान हूँ।

Crop/Agriculture Practive	Wheat/Line Sowing
उत्पादन (Yield)	28.2 क्विंटल प्रति हे0
Sale Value	Rs.45120.00
Straw	Rs.7050.00
Input Cost	Rs. 13800.00
Labour Cost	Rs. 8280.00
Any Other Cost	Rs. 3420.00
Net Saving	Rs.26670.00

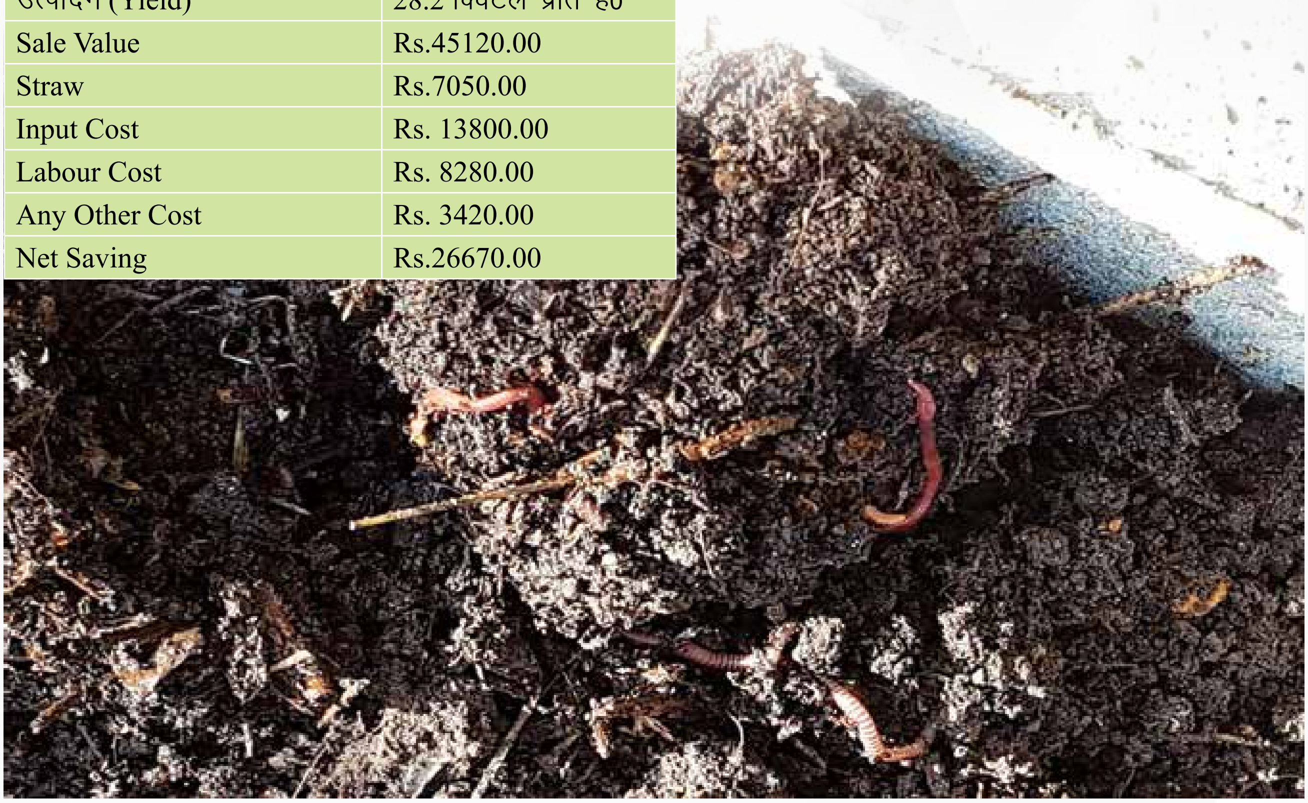

नई तकनीक से मुनाफा

किसान का नाम	श्री शंकर प्रसाद यादव
पिता / पति का नाम	श्री मोहन यादव
ग्राम	गोबरडीह
पंचायत	करमा
प्रखण्ड	हंटरगंज
डाक घर	जोरी
जिला	चतरा
जमीन का ब्यौरा	05 एकड
सिंचित	04 एकड
असिंचित	01 एकड
मोबाईल नं०	7033862406
क्या आप SHG / Producers Cooperative / Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	नहीं
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	NFSM Pulses, (2018), TRFA, (2019) ATMA (Veg. Demo. 2019) ATMA Farm School, 2017

मै शंकर प्रसाद यादव, पिता श्री मोहन यादव, ग्राम–गोबरडीह, पंचायत करमा, प्रखण्ड–हंटरगंज का रहने वाला किसान हूँ। आत्मा के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ मुझे प्राप्त हुआ और मैं विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों में भाग लिया जिससे खेती में असीम परिवर्तन कर पाया जिसका परिणाम हुआ कि पहले हम खेती करते थे लेकिन उत्पादन पूरा नहीं हो पाता था। वर्ष में किसी खेत में एक या दो फसल लगा पाता था। आत्मा के प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के द्वारा मेरे गांव में आत्मा द्वारा संचालित होने वाली किसान गोष्ठी के माध्यम से बताया गया कि हम जो खेती करते हैं उस खेती में थोडा बहुत परिर्वतन कर के उसी खेत में अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए फसल चक्र को अपनाना, संतुलित उर्वरक का प्रयोग, मिट्टी जांच, कीटनाशक का प्रयोग करना, पंक्तिबद्ध बोआई तथा बीजोपचार करके बीज का बोआई करना। इस गोष्ठी से हमने सीखा कि हम खेती कर रहे हैं लेकिन उसी खेती कि प्रणाली में कुछ विधियां छूट जाने से काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। तब से मैंने अपने खेतों में सभी वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करते हुए खेती किया जिसके फलस्वरूप हमने पाया कि खेती की लागत में कमी आई तथा उत्पादन में वृद्धि प्राप्त हुआ।

आत्मा के द्वारा रबी में किसान पाठशाला का संचालन करने के लिए हमें प्राप्त हुआ इसके तहत मेरे द्वारा गेहूँ की उन्नत प्रजाति PBW–154 का पंक्तिबद्ध बोआई किया गया तथा संतुलित उर्वरक के साथ सूक्ष्म पोषक तत्व बोरॉन का प्रयोग कराया। इस पाठशाला में 25 किसानों ने भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। कीटों को पहचानने के तरीकों से कीट को प्रत्यक्ष रूप से पकड़कर सिखाया गया जिससे हम सभी को पता चला कि सही कीट का पहचान करके उचित कीटनाशकों का प्रयोग किया जाय जिससे लागत में कमी ला सकते हैं। अब हम सभी किसान अपने खेतों का मिट्टी

जांच करवाकर उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं। हम और हमारे सहयोगी किसान आत्मा के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं और अपने खेती में लगातार सुधार करते हुए उत्पादन में वृद्धि के साथ पूरे वर्ष हम खेती कर रहे है।

मैं आत्मा के तत्वावधान में रांची स्थित MASS के द्वारा दिये जाने वाले प्रशिक्षण में समय–समय पर भाग लिया जिसके द्वारा भी खेती की विभिन्न पद्धतियों की जानकारी प्राप्त हुई और आगे भी प्रशिक्षण में जाने के लिए हम और हमारे किसान तैयार रहते है। आत्मा के द्वारा लगाये जाने वाली प्रखण्ड स्तरीय और जिला स्तरीय किसान मेला में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा कई बेहतर उत्पादों को मेले में प्रदर्शित कर पुरस्कार प्राप्त किया। मैं डेमोटांड़, हजारीबाग स्थित प्रशिक्षण केन्द्र से मिट्टी जांच, संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त किया हूँ, इससे मुझे मिट्टी को सुदृढ बनाने के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। फसल अवशेष को खेत में सड़ाकर कम्पोस्ट बनाकर पुनः खेत में प्रयोग किया जा रहा है। जिससे खेतों में मिट्टी की उर्वरता सुरक्षित और संरक्षित रहती है। इस प्रकार आत्मा द्वारा चलाई जाने वाली प्रशिक्षण, परिभ्रमण और प्रत्यक्षण मुख्य कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेकर अपने खेत में वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग कर उत्पादन लागत में कमी ला पाया हूँ तथा उत्पादन में वृद्धि हुआ है। कृषि विज्ञान केन्द्र, चतरा और आत्मा के सहयोग से वैज्ञानिक अन्तरमिलन कार्यक्रम के अन्तर्गत गाँव में वैज्ञानिकों के द्वारा किसानों को कीट व रोग संबंधित प्रशिक्षण ससमय दिया जाता है जिसका लाभ हम सभी किसानों को प्राप्त होता है।

इस प्रकार आत्मा के सम्पर्क में आने से पूर्व में जो खेती कर रहा था, उसमें छोटी–छोटी कमियाँ रह जाने के कारण लागत ज्यादा लगता था, हम परेशान भी रहते थे और उत्पादन इतना होता था कि लागत भी सही से नहीं निकल पाता था। आत्मा के सम्पर्क में आने के बाद मेरे अंदर काफी परिवर्तन हुआ जिससे अपने खेती में परिर्वतन लाया तथा वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल कर खेती लागत को कम किया जिसके फलसवरूप उत्पादन अच्छा प्राप्त हुआ अब मैं अपने अनाज को बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहा हूँ इससे हम तथा हमारा परिवार काफी अच्छे ढंग से जीवन यापन कर रहा है। आत्मा का हम तथा हमारा परिवार हमेशा धन्यवाद करता है कि इसकी गतिविधियों से प्राप्त जानकारी के अनुसार अपने और खेती में आंशिक परिवर्तन कर पाया और आज मैं एक सफल प्रगतिशील किसान हूँ।

Crop/Agriculture Practive	Wheat/Line Sowing
उत्पादन (Yield)	29.2 क्विंटल प्रति हे0
Sale Value	Rs.46720.00
Straw	Rs.7500.00
Input Cost	Rs. 14600.00
Labour Cost	Rs. 8550.00
Any Other Cost	Rs. 3220.00
Net Saving	Rs.27850.00

महिला किसान की जुबानी

किसान का नाम	मंजु देवी
पिता / पति का नाम	दिनेश पासवान
ग्राम	चन्द्रीगोविन्दपुर
पंचायत	चन्द्रीगोविन्दपुर
प्रखण्ड	प्रतापपुर
जिला	चतरा
जमीन का ब्यौरा	–
सिंचित	–
असिंचित	–
मोबाईल नं०	7061210367
क्या आप SHG / Producers Cooperative / Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	हाँ

मैं मंजु देवी, पति दिनेश पासवान, ग्राम–चन्द्री गोविन्दपुर, पंचायत–चन्द्री गोविन्दपुर, प्रखण्ड–प्रतापपुर की रहने वाली किसान हूँ। आत्मा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र से संचालित विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणो में भाग लिया जिससे खेती में असीम परिवर्तन कर पाई जिसका परिणाम हुआ कि पहले हम खेती करते थे लेकिन उत्पादन पूरा नही हो पाता था। वर्ष में किसी खेत में एक या दो फसल लगा पाती थी। आत्मा के प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के द्वारा मेरे गांव में आत्मा द्वारा संचालित होने वाली किसान गोष्ठी के माध्यम से बताया गया कि हम जो खेती करते हैं उस खेती में थोड़ा बहुत परिवर्तन कर के उसी खेत में अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ भी मुझे प्राप्त हुआ तथा संतुलित उर्वरक का प्रयोग किये। इसके लिए फसल चक्र को अपनाना, संतुलित उर्वरक का प्रयोग, मिट्टी जांच, कीटों को पहचान कर कीटनाशक का प्रयोग करना, पंक्तिबंद्ध बोआई तथा बीजोपचार करके बीज का बोआई करना। गोष्ठी से हमने सीखा कि हम खेती कर रहे हैं लेकिन उसी खेती की प्रणाली में कुछ विधियां छूट जाने से काफी नुकसान उठाना पढ रहा है। तब से मैंने अपने खेतों में सभी वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करते हुए खेती किया जिसके फलस्वरूप हमने पाया कि खेती की लागत में कमी आई तथा उत्पादन में वृद्धि हुआ।

अब हम सभी किसान अपने खेतों का मिट्टी जाँच करवाकर उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं। हम और हमारे सहयोगी किसान आत्मा के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं और अपने खेती में लगातार सुधार करते हुए उत्पादन में वृद्धि के साथ पूरे वर्ष हम खेती कर रहे है

मैं आत्मा के द्वारा लगाये जाने वाली

प्रखण्ड स्तरीय और जिला स्तरीय किसान मेला में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा कई बेहतर उत्पादों को मेले मे प्रदर्शित कर पुरस्कार प्राप्त किया। फसल अवशेष को खेत मे सड़ाकर कम्पोस्ट बनाकर पुनः खेत में प्रयोग हमारे द्वारा किया जा रहा है। जिससे खेतों में मिट्टी की उर्वरता सुरक्षित और संरक्षित रहती है। इस प्रकार आत्मा द्वारा चलाई जाने वाली प्रशिक्षण, परिभ्रमण और प्रत्यक्षण मुख्य कार्यो में सक्रिय रूप से भाग लेकर अपने खेत में वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग कर उत्पादन लागत में कमी ला पाया हूँ तथा उत्पादन में वृद्धि हुआ है। कृषि विज्ञान केन्द्र, चतरा और आत्मा के सहयोग से वैज्ञानिक अन्तरमिलन कार्यक्रम के अन्तर्गत गाँव में वैज्ञानिकों के द्वारा किसानों को कीट व रोग संबंधित प्रशिक्षण स–समय दिया जाता है जिसका लाभ हम सभी किसानों को प्राप्त होता है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना अन्तर्गत वर्तमान मे मूंग की उन्नत प्रजाति विराट का बोआई मेरे द्वारा किया गया है।

प्रधानमंत्री सम्मान निधि योजना एवं कृषि ऋण का लाभ भी प्राप्त हुआ है। साथ ही मै स्वयं सहायत समूह भी चलाती हूँ। जिसका नाम खुशी अजीविका सखी मंडल है मेरे समूह को इस वर्ष कृषि यांत्रिकरण बैंक योजना के तहत मिनी ट्रैक्टर एवं रोटावेटर मिला है। जिससे मेरे पंचायत के सभी महिला समूहों को इसका लाभ मिला है। वैसे कृषक जो कृषि ऋण से वंचित हैं उनको कृषि ऋण के लिए प्रेरित कर फार्म भरा जा रहा है तथा अन्य कृषकों को भी फार्म भरने हेतु प्रेरित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री कृषि सूक्ष्म सिंचाई योजना की जानकारी प्राप्त कर प्रधानमंत्री कृषि सूक्ष्म सिंचाई योजना हेतु आवेदन भरा गया है।

नई तकनीक को अपनाकर कम लागत में अच्छी उत्पादन प्राप्त कर रही हूँ, जिससे मेरी आमदनी में वृद्धि हुई है, जीवन–यापन में बहुत सुधार हुआ है, आज मेरा पूरा परिवार खुशहाल है। हमसे प्रेरित होकर आस–पास के किसान भी नई तकनीक को अपना रहे हैं जिससे उनलोंगों का भी जीवन–यापन में बहुत सुधार हो रहा है।

एकता में ही बल है

किसान का नाम	उषा देवी
पिता / पति का नाम	बालेश्वर राय
ग्राम	नुनुराय नवाडीह
पंचायत	जीवनबांध
प्रखण्ड	पालोजोरी
जिला	देवघर
जमीन का ब्यौरा	05 एकड
सिंचित	02 एकड
असिंचित	03 एकड
मोबाईल नं०	8709115747
क्या आप SHG / Producers Cooperative / Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	हाँ
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	NFSM Pulses, (2018), TRFA, (2019) ATMA (Veg. Demo. 2019) ATMA Farm School, 2017

आज झारखण्ड राज्य में महिला स्वंय सहायता समूह अर्थात सखी मंडल का महत्वपूर्ण स्थान है। झारखण्ड सरकार द्वारा संचालित महिला समूह का कृषि क्षेत्र में विशेष योगदान है। ऐसे ही एक महिला स्वंय सहायता समूह जिसका नाम दुर्गा आजीविका स्वंय सहयता समूह है, जो ग्राम नुनुराय नवाडीह पंचायत जीवनबांध, प्रखण्ड पालोजोरी जिला– देवघर में काम कर रही है। इस समूह की महिलाओं ने कृषि क्षेत्र में अपनी कड़ी मेहनत और नई तकनीक से खेती करके अपने को स्वालम्बी और अलग पहचान बना रही है। समूह की महिलायें कृषि क्षेत्र में खरीफ रबी, गरमा, मौसम में फसल उत्पादन करती हैं परिवार का भरन–पोषण करती हैं और परिवार के बच्चों को शिक्षा भी देते हैं। इस समूह की महिलाओं को कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) के बी.टी.एम. / ए.टी.एम, द्वारा मिर्च की खेती के लिए बीज प्रभेद NSC 623 B, NSC 624B, NSC625B, NSC619B का 40 ग्राम बीज प्रशिक्षण देकर उपलब्ध कराया गया, जिसमें समूह की सभी महिलाओं ने अच्छी तरह से लगाया और अच्छा उत्पादन किया। इनमें से समूह की एक सदस्य उषा देवी पति– बालेश्वर राय की सफलता की कहानी है। इनका कुल रकबा 5 एकड़ है जिसमें 2 एकड़ सिंचित और 3 एकड़ असिंचित है। जो कि 7 डी. जमीन में मिर्च की खेती की और लगभग 6 क्विंटल मिर्च का उत्पादन किया और लगभग 36000 रू. की आमदनी की। उनका कहना है कि (आत्मा) बी.टी.एम एवं ए.टी.एम द्वारा प्रशिक्षण पाकर नई तकनीकी से खेती की और उर्वरक (डी.ए.पी., यूरिया) का कम उपयोग कर गोबर खाद और वर्मी कम्पोस्ट से खेती की, और उनका कहना है कि गोबर खाद और वर्मी कम्पोस्ट से खेती करने से खेती की उर्वरा शक्ति और खेत में नमी बरकार रहती है और खेत हरा–भरा रहता है। फसल खाने में अच्छा लगता है और लाभदायक भी है। शरीर में किसी तरह की बीमारी नहीं होती है। अगली बार से मैं गोबर खाद और वर्मी कम्पोस्ट से ही करूंगी और विशेष कहना है कि मिर्चा लगाने में खर्च

कम और लाभ अधिक होता है। मिर्चा की आमदनी से परिवार के विकास कार्यों, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में अच्छा सहयोग मिला, जिसमें जीवन स्तर में काफी सुधार हुआ।

Crop/Agriculture Practice	मिर्च की खेती
Yield of crop/ product	6 Qtl
Sale Value	36,000
Input Cost	1,700
Labour Cost	3,000
Any other Cost	2,300
Net Saving	29,000

छोटे प्रयास से मिली प्रतिष्ठा

किसान का नाम	सिद्दीक अंसारी,
पिता / पति का नाम	दफ्तर अंसारी
ग्राम	मोराडीह
पंचायत	पाण्ड्रबेजरा
प्रखण्ड	पूर्वी टुण्डी,
जिला	धनबाद
जमीन का ब्यौरा	—
सिंचित	—
असिंचित	—
मोबाईल नं०	7764802564
क्या आप SHG / Producers Cooperative / Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	नहीं
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	-

मैं सिद्दीक अंसारी, ग्राम – मोराडीह, पंचायत – पाण्ड्रवेजरा, प्रखण्ड पूर्वी टुण्डी, धनबाद का एक किसान हूँ। मेरे पास दो एकड़ खेती लायक जमीन हैं। सबसे पहले धान एंव सब्जी की परम्परा2गत ढंग से खेती करता था। जिसमें बहुत कम उपज और मुनाफा भी कम होता था। पूर्व में करैला सब्जी के उत्पादन में बीमारी तथा सही आकार के नहीं होने के कारण मुनाफा कम होता था। प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक द्वारा मुझे सब्जी का उत्पादन बढ़ाने हेतु आत्मा, धनबाद में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया, जिसमें मुझे वैज्ञानिक ढंग से करैला के उत्पादन की ट्रेनिंग दी गई, आत्मा द्वारा मुझे करैला के बीज तथा उर्वरक दी गई तथा समय–समय पर आत्मा तथा कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा खेत पर वैज्ञानिक विधि से ज्यादा उत्पादन के बारे में बताया गया। आत्मा द्वारा सही मार्गदर्शन से मेरे करैला का उत्पादन बढ़ गया (पहले 40 क्विं / एकड़, अब 60 क्विं0 / एकड़) तथा बीमारी से निजात तथा आकार भी सही हो गया। मेरी अच्छी पैदावार की देखकर बाकी किसान करैला की खेती शुरु कर दिये हैं। मैं प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक को धन्यवाद देता हूँ कि जिसकी वजह से मेरा मुनाफा बढ़ गया और मेरी किसानों की बीच प्रतिष्ठा भी बढ़ गई।

श्री विधि से दोगुनी उपज संभव

किसान का नाम	जयन्ति देवी
पिता / पति का नाम	प्राणधन महतो
ग्राम	बेलमी
पंचायत	लेदाटांड
प्रखण्ड	तोपचांची
जिला	धनबाद
जमीन का ब्यौरा	–
सिंचित	–
असिंचित	–
मोबाईल नं०	
क्या आप SHG / Producers Cooperative / Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	हाँ
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	-

मैं जयन्ति देवी गाँव बेलमी पंचायत – लेदाटांड़, तोपचांची के रहने वाली हूँ। मूल रुप से कृषि ही मेरा व्यवसाय है। मेरे पास 3.0 एकड़ खेत है जिसमें मुख्य रुप से खरीफ (धान, अरहर, मक्का) रबी (गेहूँ, चना) तथा सब्जी की खेती करती हूँ। हमारे जमीन में एक कुआँ है, तथा गाँव में 2 तालाब है। मैं मूलतः कपूरिया, बाघमारा प्रखण्ड, धनबाद की रहने वाली हूँ, जहाँ मेरे परिवार में खेती नाम मात्र की होती थी। शादी के बाद जब मैं बेलमी आई तो हमारे परिवार वाले परम्परागत ढंग से खेती करते थे। दो वर्ष पूर्व में मुझे ATIC CENTRE में प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक तथा अन्य लोगों से श्री विधि से धान की खेती के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने एक एकड़ के लिए बीज एवं उर्वरक मुझे दिया। समय–समय पर उनलोगों ने खेत पर आकर खेती के तरीके और विधि से अवगत कराया। आत्मा के लोगों द्वारा खेत की मिट्टी जाँच भी करवाई गई तथा मिट्टी सुधार के लिए डोलोमाइट पाउडर भी दिया। श्री विधि से खेती करने पर मेरी फसल की उपज दुगनी हो गई और मुनाफा भी दुगुना हो गया। मैं लेदाटांड़ पंचायत की मुखिया भी 5 साल तक रही हूँ। मेरे प्रेरित करने पर 6–7 किसान श्री विधि से धान की खेती कर रहे हैं और संतुष्ट है। अब मैं मिश्रित खेती भी करती हूँ। मैं आत्मा, तोपचांची को धन्यवाद देती हूँ जिनकी वजह से मेरी आमदनी भी बढ़ी और मैं एक अच्छा प्रगतिशिल किसान बन सकी और लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन सकी।

खेती के साथ पशुपालन भी आय का विकल्प

किसान का नाम	श्रीमती बेला सोरेन
पिता / पति का नाम	श्री स्टेफन मरांडी
ग्राम	जमुनीया
पंचायत	माथोकेसो
प्रखण्ड	सरैयाहाट
जिला	दुमका
जमीन का ब्यौरा	5 एकड़
सिंचित	2 एकड़
असिंचित	3 एकड़
मोबाईल नं०	–
क्या आप SHG / Producers Cooperative / Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	हाँ
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन धान, टी0आर0एफ0ए0 दलहन एवं SMAE

श्रीमती बेला सोरेन, पति श्री स्टेफन मरांडी ग्राम–जमूनीया, पंचायत–माथाकेसो प्रखंड सरैयाहाट जिला– दुमका की निवासी है। श्रीमती बेला सोरेन जमुनीया ग्राम की बहू है। शादी के बाद जब ये अपने ससुराल आयी तो इनके ससुराल की आर्थिक स्थिति काफी खराब थी। श्रीमती बेला सोरेन ने इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई की है। इनके पति के पास कुल मिलाकर 5 एकड़ असिंचित जमीन थी। इनके ससुराल में ज्यादातर लोग अनपढ़ थे, ससुराल वाले रूढ़िवादी सोच के थे, पति ज्यादातर समय ताश खेलकर या अन्य बेकार कार्यों में समय बर्बाद करते थे। एक एकड़ के खेत में वर्ष में एक बार किसी तरह धान की फसल लगा देते थे। जिससे इनके पूरा परिवार निर्भर करता था। घर की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय थी। श्रीमती बेला सोरेन ने सर्वप्रथम ससुराल के रूढ़िवादी सोच से बाहर निकलकर स्वयं खेती करने का मन बनाया उन्होंने आत्मा के कृषक मित्र एवं प्रखंड तकनीकी प्रबंधक से संपर्क किया। उन्होंने अपने खेत में धान के अलावा रबी में भी सरसों, चना आदि फसलों की खेती की। इससे उनकी आमदनी बढ़ती गई। पढ़ी–लिखी होने के कारण वो कृषि विभाग आत्मा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी भाग लेती रही जिससे उन्हें खेती के आधुनिक तकनीक की जानकारी मिलती रही और इस नयी तकनीक का इस्तेमाल अपने खेत में किया। उन्होंने सर्वप्रथम धान की श्री विधि से खेती अपने गाँव में आरंभ की। उन्होंने केवल अपनी 50 डिसमिल की जमीन पर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन धान के द्वारा श्री विधि से खेती कराने हेतु बीज उपलब्ध कराया गया साथ ही इन्हें तकनीकी जानकारी दी गई। गाँव के अन्य लोग उन्हें इस विधि से खेती करने के लिये मना करते रहे। लेकिन श्रीमती बेला सोरेन ने किसी की एक न सुनी। जब उनका धान फसल काफी अच्छी हुई तो गाँव वाले भी उनकी खेत को देखकर काफी अचंभित हुये उनका मनोबल और आत्मविश्वास खेती के प्रति काफी बढ़ा। अब इस काम में उनके पति भी उनका साथ देने लगे। उनके खेत के आसपास सिंचाई का कोई साधन नहीं था जिससे उन्हें फसलों

में सिंचाई करने में काफी परेशानी होती थी। उन्होंने अपने खुद से एवं अपने पति के प्रयास से एक कुंआ खोदा और सभी पाँच एकड़ जमीन पर मौसमी फसल उगाना शुरू किया। उन्होंने अब फसलों के अलावा सब्जी की खेती करना प्रारंभ किया। उन्होंने अपने खेत में आलू, टमाटर, मिर्च आदि सब्जी का उत्पादन करना प्रारंभ किया। जिससे उनकी आमदनी में काफी इजाफा होने लगा। पढ़ी लिखी होने के कारण उन्होंने अब कृषि के अलावा पशुपालन, बकरी पालन एवं सूअर पालन करना आरंभ किया। T&D नस्ल के सुअर भी पालन प्रारंभ किया। इसकी बिक्री के लिये उन्होंने कलकत्ता के व्यवसायी से संपर्क किया जिससे उनको पशुपालन से भी अच्छी खासी आमदनी होने लगी। अब उन्होंने धीरे–धीरे दूसरों के खेती योग्य जमीन को लीज पर लेकर खेती करना आरंभ किया और लगातार उन्हें इसका फायदा मिलता रहा। 2 एकड़ की जमीन पर राष्ट्रीय बागवानी मिशन द्वारा आम, अमरूद, एवं लीची का बगीचा लगाया गया है जिससे प्रतिवर्ष उन्हें 2.50 से 3 लाख रू0 तक की आमदनी होती है। उन्होंने अपने खेत के एक छोटे से हिस्से में तालाब की खुदाई भी की है। जिसमें बत्तख पालन एवं मत्स्य पालन भी किया जा रहा है। इसके अलावा उनके पास जर्सी नस्ल की 2 गायें एवं 4 भैंसे भी है। उन्होंने कड़कनाथ नस्ल की मुर्गी पालन भी करना प्रारंभ किया है। अब उनका खेत समेकित कृषि प्रणाली का जीता जागता उदाहरण है। अब उस गाँव के नहीं बल्कि जिले के अन्य कृषकों के लिये भी श्रीमती बेला सोरेन एक मिशाल कायम की है। श्रीमती बेला सोरेन के 2 लड़के हैं। एक की उम्र 8 वर्ष एवं दूसरे की 6 वर्ष है। अपने बच्चों को अच्छे विद्यालय से शिक्षा दिला रही है।

Crop/Agriculture Practice	धान, मक्का, आलू, टमाटर	गोभी, मिर्च, चना, गेहूँ
Yield of crop/ product	धान–70 क्विंटल, मक्का–25 क्विंटल, आलू–50 क्विंटल, टमाटर–100 क्विंटल	गोभी–20 हजार नग, मिर्च–30 क्विंटल, चना–12 क्विंटल, गेहूँ–12 क्विंटल
Sale Value	Rs 31,2000	
Straw	Rs 60,000	
Input Cost	Rs 45,000	
Labour Cost	Rs 30,000	
Any other Cost	Rs 15,000	
Net Saving	Rs 2,82,000	

मेहनत किसी का मोहताज नहीं

किसान का नाम	श्रीमती काजल गोराई
पिता/पति का नाम	श्री माथुर गोराई
ग्राम	बांगुरदा
पंचायत	बांगुरदा
प्रखण्ड	पटमदा
जिला	पूर्वी सिंहभूम
जमीन का ब्यौरा	3 एकड़
सिंचित	1 एकड़
असिंचित	2 एकड़
मोबाईल नं०	–
क्या आप SHG / Producers Cooperative / Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	हाँ
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	ATMA- SAME (2015-16)

मेहनत किसी का मोहताज नहीं होता है, काजल गोराई ग्राम बांगुरदा, पंचायत–बांगुरदा, प्रखंड पटमदा, प० बंगाल से ब्याह होकर बांगुरदा ग्राम में 2004 में आई। उसकी पढ़ाई सिर्फ पाँचवी तक ही है। पति जमशेदपुर से बंगाल तक चलने वाली बस में कंडक्टर का काम करते थे। रोजी रोटी दैनिक मजदूरी से ही चलता था। किसी तरह घर का खर्च चल रहा था। परिवार में संख्या भी बढ़ रही थी। काजल गोराई ने अपने पति से सलाह कर लीज पर गांव में ही 2 एकड़ जमीन ली। चूंकि पति दैनिक मजदूरी के लिए चले जाते थे इस स्थिति में खेत का काम काजल को ही देखना पड़ता था। खरीफ मौसम में काजल गोराई धान की खेती करती थी। रबी मौसम में घर में खाने लायक सब्जी उगा लेती थी। लेकिन इससे वह संतुष्ट नहीं थी क्योंकि अपने बच्चों की पढ़ाई एवं अन्य खर्च पूरा नहीं कर पा रही थी। बांगुरदा ग्राम में सिमंत सेन मोदक किसान मित्र हैं जो कि आत्मा एवं अन्य विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की चर्चा गाँव के बैठकों में किया करते थे। काजल भी उसके सम्पर्क में आई। उसने भी खेती की नई तकनीक की चर्चा सुन रखी थी कि नये तरीके से खेती करने पर फसल का उत्पादन बढ़ता है। उसमें भी जानने की इच्छा जागी। श्री विधि से धान खेती की योजना चल रही थी। काजल गोराई को भी आत्मा के द्वारा प्रशिक्षण के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र भेजा गया। पहली बार काजल के द्वारा श्री विधि से धान की खेती की गयी। जब वह एक–एक बिचड़ा खेत पर लगा रही थी उस समय आस पास के किसानों ने उसका मजाक उड़ाया कि क्या एक–एक बिचड़ा से धान होगा। उसे भी शक होने लगा कहीं धान का बीज बर्बाद तो नहीं कर रही है। किसान मित्र एवं अन्य प्रसार कर्मी ने हौसला बढ़ाया। इस दौरान पटमदा में ही अन्य किसान श्री विधि से धान की खेती करने लगे जिससे उनकी हिम्मत बढ़ी। दिनों दिन फसल में कल्ले आने लगे। प्रशिक्षण में बताए गए तकनीक के अनुसार उसने भी कोनोवीडर चलाया। उसने कुल पंद्रह दिन के अंतराल पर

दो बार कोनोवीडर चलाया। फसल में बढ़ोतरी देखकर वह खुश हुई। उसे धान का अच्छा उत्पादन भी प्राप्त हुआ। इस दौरान उसे राँची में सब्जी खेती का प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। प्रशिक्षण के उपरांत उसने सब्जी की खेती भी की। मुख्यतः टमाटर, बैंगन एवं मूली की सब्जी उसने लगाया। साथ–साथ गाँव में महिलाओं का समूह ''माँ चंडी महिला समिति'' का गठन किया जिसका संचालन काजल गोराई के द्वारा किया जाता है। वह बहुत खुश है। बच्चों को अच्छी शिक्षा दे रही है। उसे ऐसा लगता है कि वो खुद पढ़ाई नहीं कर पाई परंतु अपने बच्चों के शिक्षा में कोई कमी ना हो।

Crop/Agriculture Practice	Paddy	Paddy & Vegetable
Yield of crop/product	12 Qtl.	Paddy-60 Qtl., Brinjal-40 Qtl. Raddish-80 Qtl.
Sale Value	12,000/-	1,52,000/-
Input Cost	3,000/-	20,000/-
Labour Cost	3500/-	35000/-
Any other Cost	1000/-	5000/-
Net Saving	4500/-	92,000/-

कम लागत ज्यादा मुनाफा

किसान का नाम	यदुनाथ गोराई
पिता / पति का नाम	शंकर गोराई
ग्राम	चुरदा
पंचायत	पटमदा
प्रखण्ड	पटमदा
जिला	पूर्वी सिंहभूम
जमीन का ब्यौरा	11 एकड़
सिंचित	6 एकड़
असिंचित	5 एकड़
मोबाईल नं०	9431790512
क्या आप SHG / Producers Cooperative / Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	हाँ
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	ATMA-SAME (2011-11), NHM (2015-16), RKVY (2010-11), NFSM (2016-17)

श्री यदुनाथ गोराई ग्राम चुड़दा, बांसगड़, पटमदा के प्रगतिशील कृषक हैं। जिनकी पढ़ाई इंटर विज्ञान से हुई। घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने कारण आगे की पढ़ाई ये नहीं कर पाए। पढ़ाई छूटने के बाद इन्होंने अपने पिता की पुश्तैनी खेती को ही चुना। चूंकि ये पढ़ाई में अच्छे थे जिसके कारण कृषि की नई तकनीकों को अच्छी तरह समझते थे। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहने एवं खेत में सिंचाई की सुविधा नहीं होने के कारण इन्होंने बरसाती मूली का उत्पादन शुरू किया। क्योंकि बरसात में मूली बाजार में कम ही मिलता है जिसके कारण इन्हे काफी लाभ मिला। कृषि विभाग, उद्यान विभाग एवं आत्मा के सम्पर्क में आने के बाद इन्होंने कृषि यंत्र – पंप सेट, स्प्रेयर एवं लिफ्ट इरिगेशन प्राप्त किया। उद्यान विभाग से सब्जी की उन्नत बिचड़ा उत्पादन के लिए ट्रे अनुदान पर प्राप्त किया। सब्जी खेती में इनकी रूचि को देखकर इन्हें प्रशिक्षण के लिए आत्मा के माध्यम से राज्य के बाहर भेजा गया ताकि उन्नत तकनीक की जानकारी प्राप्त कर खेती कर सके। इनके कृषि कार्य में रूचि देखकर भाईयों ने भी सहयोग किया। पटमदा क्षेत्र में ये सब्जी उत्पादक के रूप में अपनी एक अलग पहचाई बना ली। ये लीज पर जमीन लेकर खेती करने लगे साथ ही जिस किसान का ये जमीन लीज पर लेते हैं वे उनको अपना सहयोगी के रूप में भी रखने लगे। कुल मुनाफा का आधा – आधा वे लेते थे जिसके कारण खेती में रूचि रखने वाने किसान यदुनाथ के साथ खेती करने लगे। इनके साथ काम करने वाले किसानों को भी विभाग द्वारा उपलब्ध अनुदान का लाभ मिलने लगा। यदुनाथ अन्य किसानों के साथ सालों भर खेती करने लगे। इनकी सब्जी जमशेदपुर मंडी के अलावे अन्य जगह प० बंगाल, बिहार, उड़ीसा में जाने लगा। ये बाजार भाव के अनुसार ही सब्जी अन्यत्र भेजते है। इनके साथ अभी करीब 50 से अधिक किसान सब्जी की खेती खासकर टमाटर की खेती में जुड़े हुए हैं जिन्हें ये रोजगार के साथ ही कृषि के नये तकनीक से खेती की जानकारी दे

रहे है। टमाटर की खेती में ये एक मिशाल है। जो कि प्रति वर्ष कई तरह के टमाटर के प्रभेदों से खेती कर उत्पादन बढ़ा रहे हैं।

Crop/Agriculture Practice	Paddy	Paddy & Vegetable
Yield of crop/product	15 Qtl.	Paddy-60 Qtl., Tomato-40 Qtl. Raddish-80 Qtl. Cucumber-50 Qtl.
Sale Value	18,000/-	2,55,000/-
Input Cost	4,000/-	35,000/-
Labour Cost	3500/-	35000/-
Any other Cost	1000/-	8000/-
Net Saving	9500/-	1,77,000/-

नया दौर नया अंदाज

किसान का नाम	अयोध्या मेहता
पिता/पति का नाम	बेलास महतो
ग्राम	कोचेया
पंचायत	अमहर खास
प्रखण्ड	विशुनपुरा
जिला	गढ़वा
जमीन का ब्यौरा	4 एकड
सिंचित	2 एकड
असिंचित	2 एकड
मोबाईल नं०	9570204609
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	नहीं
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	SAME / ATMA कार्यक्रम

मैं श्री अयोध्या मेहता, ग्राम कोचेया, पंचायत अमहर खास, प्रखण्ड विशुनपुरा जिला गढ़वा का निवासी हूँ, मैं आठवीं कक्षा तक पढ़ाई किया हूँ, मेरे परिवार में कुल सात सदस्य हैं। मैं अपने दो एकड़ भूमि पर सब्जी एवं धान की खेती करता था। जिससे मेरी आमदनी कम होती थी और लागत अधिक लगता था। जिससे परिवार चलाने में काफी कठिनाई होती थी। एक दिन प्रखण्ड परिसर में कृषक चौपाल का आयोजन किया गया था जिसमें बहुत सारे किसान आये हुए थे। मैंने देखा कि वहां पर वैज्ञानिक विधि से खेती करने हेतु किसानों को जानकारी दी जा रही थी। जिसमें केला की खेती, पपीता की खेती एवं अन्य फसलों के बारे बताया जा रहा था। मेरे पास 50 केले के पौधे थे जो अपने छोटे से प्लॉट में लगाया था परन्तु फल का साईज छोटा एवं उत्पादन कम हो रहा था। एक दिन प्रखण्ड के बी०टी०एम०/ए०टी०एम० से मिला उन्होंने बताया कि आप अपने पौधे को लाईन से एवं सही दूरी पर लगाएँ जिससे पौधे का विकास अच्छा होगा और फल भी अच्छे होंगे। और उनके द्वारा बताया गया कि आप कम से कम 1000 (एक हजार) केले का पौधा लगाएँ। जिससे आपकी आमदनी बढ़ जाएगी। आज हमारे पास केले के नव गछिया प्रभेद के 1000 (एक हजार) पौधे हैं। जो प्रत्येक साल तैयार होने के बाद अब मुझे अच्छी कीमत मिल जाती है। मैं आत्मा गढ़वा की ओर से

परिभ्रमण हेतु दिल्ली भी गया था तथा समय–समय पर NFSM योजना के अन्तर्गत मूँगफली, सरसों इत्यादि फसलों का बीज प्राप्त किया हूँ जिसका अच्छा उत्पादन हुआ है।

	गतिविधि / स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	गतिविधि / स्कीम
फसल का उत्पादन	धान व गेहूँ	केला
बिक्री मुल्य	12 से 15 रु० प्रति किलो	200 रु० प्रति कान्ही
पुआल	घर में हीं उपयोग करना	–
लागत मुल्य	8000 रु० प्रति एकड़	20000 रु० प्रति एक हजार पौधे में
मजदूरी लागत	5000 रु०	5000 रु०
अन्य खर्च	1000 रु०	5000 रु० (खाद एवं कीटनाशक)
अंतिम बचत	20000 रु०	150000 रु०

हौसले ने बदल दी तकदीर

किसान का नाम	अशोक कुमार वर्मा
पिता / पति का नाम	स्व. घनश्याम माहतो
ग्राम	पाण्डेयडीह
पंचायत	पाण्डेयडीह
प्रखण्ड	गिरिडीह
जिला	गिरिडीह
जमीन का ब्यौरा	6 एकड
सिंचित	3.2 एकड
असिंचित	2.8 एकड
मोबाईल नं०	-
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	किसान मित्र
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	SAME, NFSM

मैं अशोक वर्मा, पिता घनश्याम महतो, ग्राम–पाण्डेयडीह, पंचायत – पाण्डेयडीह प्रखण्ड–गिरिडीह, जिला गिरिडीह का किसान हूँ। मैं सन् 1990 में मैट्रीक परीक्षा पास किया था, पैसे के अभाव के कारण मैं आगे की पढ़ाई नहीं कर पाया। इसके बाद मैं 1992 में खेती का कार्य शुरू किया, शुरूआत में मैं पुरानी पद्धति से धान एवं गेहूँ की खेती करता था, जिससे उत्पादन बहुत कम होता था, और पहले मेरे गांव में सुविधाओं एवं तकनीक की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। चूंकि मेरा जन्म एक कृषक परिवार में हुआ था, पारम्परिक खेती कर परिवार चलाना मुश्किल हो गया था। एक बार तो ऐसा लगा की मानो कृषि कार्य को छोड़कर कोई दूसरा कार्य कर लिया जाए तभी मेरे गांव में कृषि प्रौधिगिकी प्रबंधन अभिकरण आत्मा से प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक गिरिडीह श्री रमेश कुमार आये और मेरे गावं में एक कृषक गोष्ठी का आयोजन किया, और उन्होंने बताया कि आप सभी लोग पारम्परिक खेती को छोड़कर नई तकनीक से खेती कीजिए। नई तकनीक से खेती करने से धान एवं गेहूँ का उत्पादन ज्यादा होगा फिर मैने SRI विधि से धान की खेती प्रारम्भ किया। श्री विधि से खेती करने पर धान का उत्पादन पारम्परिक विधि की तुलना में दोगुना हुआ जिससे मेरा हौसला बढ़ा और आमदनी भी बढ़ी। फिर मैंने गेंहूँ की खेती की, गेंहूँ का उत्पादन भी पुरानी पद्धति की तुलना में डेढ़ गुना हुआ अब मेरे परिवार की स्थिति बहुत अच्छी हो गई है, मैं अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पा रहा हूँ। मैं प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक गिरिडीह को धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया मैं बाकी लोगों को भी नई तकनीक से खेती करने के लिय प्रेरित करता रहता हूँ।

Crop/Agriculture Practive	श्री विधि से गेहूं की खेती, श्री विधि से धान की खेती, वैज्ञानिक तरीके से चना की खेती, सब्जी की खेती
Yield of Crop/ Product	Wheat (SWI) 50 Qtl/h Paddy (SRI)- 65Qtl./h. Gram-18 Qtl./h, Vegetable
Sale Value	Rs.100000.00
Straw	-
Input Cost	Rs.40000.00
Labour Cost	Rs.10000.00
Any Other Cost	Rs.2000.00
Net Saving	Rs.150000.00

आत्मा से जुड़ाव जीवन में बदलाव

किसान का नाम	सुसाना मरांडी
पिता / पति का नाम	स्व० सुमन हेम्ब्रम
ग्राम	कमलडीहा
पंचायत	चिलकारा गोविंद
प्रखण्ड	पथरगामा
जिला	गोड्डा
जमीन का ब्यौरा	5.50 बीघा
सिंचित	2.50 बीघा
असिंचित	3.00 बीघा
मोबाईल नं०	8700840203
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	अध्यक्ष (बाबा मांझी धान समूह) आत्मा गोड्डा से जुड़े हैं
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	SAME Scheme आत्मा, गोड्डा 2018–19 में कृषक पाठशाला संचालक।

मैं सुसाना मरांडी पथरगामा प्रखण्ड से 5 किलोमीटर दूर कमलडीहा गाँव में रहती हूँ। मेरे परिवार में सात सदस्य हैं। मैं विगत तीन साल से कृषक मित्र प्रदीप साह के द्वारा आत्मा. गोड्डा से जुड़ने के बाद खेती बाड़ी के तरफ ध्यान दिये जिससे मेरे परिवार में खुशहाली लौटी एवं सपरिवार अच्छे घर में रह कर आमदनी करने लगी। मेरे पास साढ़े पाँच बीघा जमीन है जिसमें मैं अधिकतर मौसमी सब्जी उगाती हूँ एवं प्रखण्ड बाजार के व्यापारी को या गाँव में बेच लेती हूँ। मुझे आत्मा के उप परियोजना निदेशक द्वारा जब कृषक पाठशाला के माध्यम से प्रशिक्षण के साथ–साथ अन्य लाभ की जानकारी मिलने लगी तो मैंने सोचा कि घर पर रह कर भी खुशी से जीवन यापन चलाया जा सकता है। इससे लगता है कि मुझे अब बाहर कहीं भी कमाने के लिये नहीं जाना पडेगा। जब हम घर पर रहते हैं तो बच्चों की देख–भाल के साथ–साथ अन्य फसल भी सालों भर खाने के लिये उगा लेते हैं। अभी मैं लगभग 8 कट्ठा में करैला एवं खीरा मचान बना कर लगाई थी जिससे खर्च काट कर लगभग 18,500.00 रुपये की बचत कर पाई हूँ। मुझे देखकर गाँव की अन्य कई महिलायें भी इस तरह की खेती करने लगी हैं और सबको इसके लिये मैं प्रेरित भी करती हूँ।

Crop/Agriculture Practive	लत्तेदार सब्जी (करेली, खीरा)
Yield of Crop/ Product	26.00 क्वी०
Sale Value	26000.00
Straw	-
Input Cost	2800.00
Labour Cost	2500.00
Any Other Cost	2200.00
Net Saving	18500.00

कृषक पाठशाला एक वरदान

किसान का नाम	दिनकर सिंह
पिता / पति का नाम	स्व० नन्देश्वर प्रसाद सिंह
ग्राम	अम्बाबथान
पंचायत	लतौना
प्रखण्ड	पथरगामा
जिला	गोड्डा
जमीन का ब्यौरा	5.00 बीघा
सिंचित	2.00 बीघा
असिंचित	3.00 बीघा
मोबाईल नं०	8757233682
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	आजीविका समूह एवं आत्मा, गोड्डा से जुड़े हैं।
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	SAME Scheme आत्मा. गोड्डा 2018–19 में जिला एवं 2019–20 में राज्य स्तर पर प्रशिक्षण (High Value Crop)

मैं दिनकर सिंह, प्रखण्ड मुख्यालय पथरगामा से 10 किलोमीटर दूर अवस्थित ग्राम अंबाबथान का निवासी हूँ। मैं दिल्ली में मजदूरी करके अपने परिवार का भरण–पोषण करता था। मेरा ज्यादातर समय दिल्ली में ही व्यतीत होता था, जिससे मुझे अपने परिवार, बच्चों एवं गाँव समाज से दूर रहना पड़ता था। मैं अपने परिवार एवं बच्चों को बिल्कुल भी समय नहीं दे पाता था और इस पीड़ा से मैं परेशान रहता था। लेकिन एक बार जब मैं घर आया तो यहाँ कृषक पाठशाला का संचालन मेरे ग्राम में हो रहा था, तभी मैंने यहाँ पर आये आत्मा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक से कृषि की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात् आत्मा से तकनीकी जानकारी एवं प्रेरणा प्राप्त करते हुए कृषि कार्य प्रारंभ कर दिया। सही समय पर मुझे आत्मा के माध्यम से राज्य स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण के दौरान हार्प, प्लांडू, रॉची आदि देखने का अवसर मिला। प्रशिक्षण पूरी होने के पश्चात् मैंने मन में ठान लिया कि अब दिल्ली पंजाब नहीं जाना है और मैंने पूरी लगन के साथ घर पर रहकर आधुनिक तरीके से कृषि कार्य शुरू कर दिया। सर्वप्रथम मैंने मात्र 2 कट्ठा जमीन में आलू की खेती किया जिसमें लगभग 4400 रु. की लागत पर सब खर्च काट कर 11,200 रु. की आमदनी हुई। पुनः मैंने इसी जमीन पर उन्नत प्रभेद का कम दिनों में उपज होनेवाला मक्का की खेती की है। इसके अलावा मूंग की भी खेती की है फसल बहुत ही अच्छा है। इसके साथ–साथ मैं घर बाड़ी में सब्जी जैसे करैला, कद्दू भिंडी आदि की भी खेती करने लगा इससे मेरी आमदनी अच्छी होने लगी। अब मैं घर पर ही अपने परिवार एवं बच्चों के साथ रहकर अच्छे से जीवन–यापन कर रहा हूँ। मेरे बच्चे जिनकी पढ़ाई–लिखाई ठीक से नहीं हो पा रही थी अब पढ़ने लगे हैं। मैं विशेष रूप से यह बताना चाहता हूँ कि मैंने जो प्रशिक्षण के दौरान फसल लगाने एवं उसकी देखभाल करनें का तरीका सीखा था उसका भरपूर लाभ मिला। इसके कारण ही कम लागत एवं कम खर्च में अधिक आमदनी संभव हो पायी। मैं गाँव के अन्य लोगों से भी गाँव में रहकर खेती कर आय बढ़ाने के लिए प्रेरित करता हूँ। इससे मुझे बहुत ही खुशी अनुभव होती है।

छोटी सी बदलाव

किसान का नाम	प्रेमचन्द यादव
पिता / पति का नाम	सोनू यादव
ग्राम	माधोपुर
पंचायत	पंचमाधव
प्रखण्ड	बरही
जिला	हजारीबाग
जमीन का ब्यौरा	7 एकड
सिंचित	5 एकड
असिंचित	2 एकड
मोबाईल नं०	9661201370
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	कृष्णा मत्स्य जीव कारीमाटी
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	Extension Reforms /N.F.S.M

प्रेमचंद यादव, पिता श्री सोनु महतो, ग्राम–माधोपुर, पंचायत–पंचमाधव, प्रखण्ड–बरही, जिला–हजारीबाग का निवासी हूँ। माधोपुर गाँव यूँ तो तिलैया डैम के किनारे बसा हुआ है, बाबजूद इसके किसानों में खेती के प्रति कोई खास उत्साह नहीं था, गाँव के लोग सिर्फ धान के समय में एक फसली खेती करते थे एवं अन्य मनरेगा तथा दूसरे कार्यो पर अपनी आजीविका के लिए निर्भर रहते थे। प्रेमचंद यादव, वर्ष 2012 में आत्मा के कृषक मित्र के संपर्क में आये। आत्मा, हजारीबाग के संपर्क में आने के बाद इन्होंने खुद आत्मा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, परिभ्रमण, किसान गोष्ठी, कृषक पाठशाला एवं प्रत्यक्षण आदि कार्यक्रमों में भाग लिया तथा गाँव के अन्य किसानों को अपने गाँव के गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया। आत्मा गतिविधियों में भाग लेने के क्रम में इन्हें उद्यान विभाग एवं मत्स्य विकास के जिला स्तरीय अधिकारी से भी जुड़ने का अवसर प्रदान हुआ। तत्पश्चात् इन्होंने दूसरे ग्रामीण युवकों को भी इन विभागों से जोड़ा। इन सब बातों का प्रभाव ऐसा रहा कि आज प्रेमचंद यादव के साथ–साथ पूरा गाँव ही मौसम में दलहन एवं तेलहन फसलों की अच्छी खेती की जाने लगी है। साथ ही डैम के पानी का लाभ लेते हुए आत्मा द्वारा गरमा मूंग प्रत्यक्षण का परिणाम देखकर गाँव के लोग भी गरमा मौसम में खेती करने लगे हैं, जिससे गाँव वाले अब न सिर्फ धान बल्कि दलहन एवं तेलहन भी पर्याप्त मात्रा में उपजाने लगे हैं। इसका लाभ प्रेमचंद यादव को मवेशी नियंत्रित करने में हुआ, क्योंकि जब प्रारंभ में वो स्वयं अपने खेत में खेती करता था तो खुली मवेशी के कारण उन्हें काफी नुकसान उठाना पड़ता था और घेराबंदी करने में खर्च लगता था। परंतु अब ऐसा स्थिति नहीं है। किसान परिभ्रमण में बागवानी फसलों में फसलों का फायदा जानने के बाद इन्होंने अपने जमीन में भी दो एकड़ में आम, पपीता एवं अमरूद का पौधा लगाया जो आज फल दे रहा है और इन्हें निरंतर आमदनी प्राप्त हो रही है। कृषि विभाग के सहयोग से इन्होंने ड्रीप भी अपने खेतों लगवाया जिसकी सहायता से तरबूज एवं सब्जी की खेती

भी कर रहे हैं और अच्छी खासी आमदनी कमा रहे हैं। मत्स्य विभाग के संपर्क से ग्रामीणों को साथ लेकर अपने गाँव में केज कल्चर भी लगवाया जिससे काफी अच्छा मछली पालन हो रहा है। जिसका लाभ खुद प्रेमचंद यादव एवं उनके साथी किसान भी ले रहे हैं। इस प्रकार आज प्रेमचंद यादव न सिर्फ अपने गाँव माधोपुर अपितु पूरे पंचमाधव पंचायत में किसानों के बीच समेकित कृषि प्रणाली एवं वैज्ञानिक विधि से खेती करने का प्रेरणाश्रोत बन गये हैं।

	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के बाद
फसल/कृषि पद्धति	पारम्परिक विधि	कतारबद्ध चना की खेती
उत्पादन	570 किलोग्राम अरहर प्रति एकड़	680 किलोग्राम अरहर प्रति एकड
बिक्री मूल्य	33060 प्रति एकड	39440 प्रति एकड
Straw (पुआल)	…………..	……………
लागत मूल्य (input cost)	6320 रू० प्रति एकड	6320 रू० प्रति एकड
मजदूरी लागत	4100 रू० प्रति एकड	2550 रू० प्रति एकड
अन्य खर्च	950 रू0 प्रति एकड़	950 रू० प्रति एकड
अंतिम बचत	21690 रू0 प्रति एकड़	29620रू0 प्रति एकड

नई शुरूआत

किसान का नाम	कलिता देवी
पिता / पति का नाम	विनेश कुमार दांगी
ग्राम	काँडतरी
पंचायत	काँडतरी
प्रखण्ड	बड़कागाँव
जिला	हजारीबाग
जमीन का ब्यौरा	5.5 एकड
सिंचित	2.3 एकड
असिंचित	3.2 एकड
मोबाईल नं०	9199708748
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	नहीं
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	N.F.S.M/ Extension Reforms

मैं कलिता देवी पति श्री बिनेश कुमार दांगी ग्राम कांडतरी प्रखण्ड बड़कागाँव की किसान हूँ। मेरी शैक्षणिक योग्यता आठवीं पास है। मैं विगत 10 वर्षों से परम्परागत ढंग से खेती करती आ रही थी। इससे मैं अपने परिवार का पालन–पोषण एवं अपने बच्चों को सही शिक्षा नहीं दे पा रही थी। मेरे परिवार की गिनती गरीब परिवार में होती थी। मेरे पास लगभग 5.5 एकड़ जमीन है। जो पहले आर्थिक कारणों से खाली पड़ा रहता था। एक बार आत्मा हजारीबाग की तरफ से मेरी एवं हमारे प्रखण्ड के अन्य किसानों के साथ मेरा परिभ्रमण कटकमदाग के प्रगतिशील कृषक श्री शिबु उराँव एवं श्री सुखदेव राणा के समेकित कृषि प्रणाली द्वारा किये गए खेती का अवलोकन कराया गया साथ हीं कुछ प्रगतिशील कृषकों के साथ–साथ मुझे भी आत्मा हजारीबाग द्वारा संचालित प्रत्यक्षण कार्यक्रम अंतर्गत सरसों बीज एवं उपादान का एक एकड़ हेतु बड़कागाँव प्रखण्ड के प्रभारी प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक श्री विजय कुमार द्वारा यह कहते हुए उपलब्ध कराया कि इस बीज एवं उपादान का प्रयोग कतारबद्ध तरीके से एंव समय अनुसार निश्चित दूरी पर करना है। तत्पश्चात् मैंने आत्मा हजारीबाग के पदाधिकारी द्वारा आयोजित चलत कृषि विद्यालय वाहन द्वारा प्रशिक्षण में भाग लेकर उन्नत तकनीक से कतारबद्ध तरीका एवं अनुशंसित खाद बीज एवं अन्य उपादान का अपने खेत में मौसम अनुसार खेती किया जिससे मुझे काफी लाभ हुआ। खेती के दौरान आत्मा, हजारीबाग में कार्यरत प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक श्री विजय कुमार एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक मो० जेया के द्वारा खेत का अवलोकन किया एवं फसल में लगे कीड़े–मकोड़े आदि से बचाव का तरीके बतलाया, इससे मेरी अच्छी उपज हुई। वर्तमान में मैं, उपजाए गये उत्पाद को बेचकर अपने बच्चों की पढ़ाई एवं खेती करने हेतु छोटे औजार यथा–नैपसेक स्प्रेयर, पंपसेट खरीदा, जिससे अब मुझे खेती करने में काफी सुविधा होती है। क्योंकि नैपसेक स्पेयर से फसल में लगने वाली कीड़े मकोड़े आदि को नियंत्रित करने हेतु अनुशंसित दवा का घोल बनाकर एक निश्चित अंतराल पर छिड़काव कर लेते हैं, साथ–साथ पंपसेट के माध्यम से

निश्चित समय पर फसल अनुसार सिचाई कर लेती हूँ। मेरी खेती को देखकर आस–पास के लोग मेरी प्रशंसा किसानों के बीच होने लगी है। मैं उत्साहित होकर अन्य कृषकों को भी वैज्ञानिक तरीके से खेती करने हेतु प्रेरित कर रही हूँ। सरसों की खेती के अलावा आत्मा हजारीबाग द्वारा सब्जी के वैज्ञानिक तरीके से खेती के बारे में भी हमलोगों को चलंत कृषि वाहन द्वारा फिल्म के माध्यम से सब्जी के वैज्ञानिक तरीके, समेकित कीट प्रबंधन, वर्मी कम्पोस्ट, दलहन एवं तेलहन की खेती के बारे बढ़िया तरीके से बतलाया गया। तकनीक के माध्यम से खासकर बेमौसमी सब्जी की खेती भी करने लगी हूँ जिससे मुझे अपने खेत से डेढ़ से दुगुना आमदनी प्राप्त हो रही है। इसको देखकर मेरे गाँव के अलावा बड़कागांव प्रखण्ड के अन्य कृषकों के द्वारा मेरे द्वारा अपनायी गई पद्धति से खेती करने लगे हैं, और पहले की अपेक्षा अधिक मुनाफा कमा रहे हैं। जिससे यहाँ के लोग अपने बच्चों को अच्छे विद्यालय में पढ़ाते हुए अच्छी परवरिश दे रहे हैं। मैं इस कार्य के लिए आत्मा हजारीबाग को तहे दिल से धन्यवाद करती हूँ।

	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के बाद
फसल/कृषि पद्धति	पारम्परिक विधि	कतारबद्ध चना की खेती
फसल का उत्पादन राई	250 किलोग्राम राई प्रति एकड़	360 किलोग्राम राई प्रति एकड़
बिक्री मूल्य	10500 प्रति एकड	15120 प्रति एकड़
Straw (पुआल)	…………..	……………
लागत मूल्य (input cost)	1650 रू० प्रति एकड	1650 रू० प्रति एकड़
मजदुरी लागत	600 रू० प्रति एकड	600 रू० प्रति एकड़
अन्य खर्च	1500 रू0 प्रति एकड़	1000 रू० प्रति एकड़
अंतिम बचत	6750 रू0 प्रति एकड़	11870 रू0 प्रति एकड़

समय सबसे अच्छा दोस्त

किसान का नाम	उदय माझी
पिता/पति का नाम	नारायण चन्द्र माझी
ग्राम	पालाजोरी
पंचायत	पालाजोरी
प्रखण्ड	कुण्डहीट
जिला	जामताड़ा
जमीन का ब्यौरा	3 एकड
सिंचित	2 एकड
असिंचित	0 एकड
मोबाईल नं०	8651367527
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	Maa Durga Kisan Samuh, Palajori
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	Extension Reforms Training (2011-12), NFSM (2019-20)

जिला मुख्यालय, जामताड़ा से लगभग 56 कि0मी0 दूरी पर स्थित कुण्डहित प्रखण्ड के पालाजोरी पंचायत के गाँव पालाजोरी, टोला डुमरा निवासी उदय माझी आज एक आदर्श किसान के रुप में क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बन चुके हैं।

वर्ष 1985 में उदय मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद I.Sc करने तथा Science Stream से पढ़ाई करने का मन बना लिया। इन्होंने वर्ष 1987 में I.Sc परीक्षा सफलतापूर्वक पास कर B.Sc में Admission ले लिया लेकिन घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण उन्होंने बीच में ही पढ़ाई छोड़ कर खेती करना प्रारंभ कर दिया। शुरुआत में ये अपने ही खेत में खेती करते थे, लेकिन धीरे–धीरे उन्होंने अपने घर एवं अपने खेत के बगल में परती पड़े जमीन को लीज पर लेकर व्यवसायिक रुप से खेती प्रारंभ की। खेती में इनको अपने बड़े भाई का भरपूर सहयोग मिला।

श्री माझी धान, गेहूँ एवं सब्जी की खेती व्यवसायिक ढंग से करने लगे जो इनके जीवकोपार्जन का मुख्य साधन बन गया। श्री माझी द्वारा सरसों की खेती बड़े पैमाने पर की जाने लगी, जिसके कारण स्थानीय स्तर पर सरसों का शुद्ध तेल की आपूर्ति इनके द्वारा कुण्डहित प्रखण्ड के लोगो को किया जाने लगा। प्रति वर्ष श्री माझी धान से 1,50,000 सरसों से 50,000 एवं सब्जी से 50,000 अर्जित कर लेते हैं। श्री माजी के पास आय का अन्य स्त्रोत गाय पालन है जिसके तहत इनके पास वर्तमान में 4 जर्सी गाय एवं 5 देसी गाय है जिससे वर्ष में इन्हें 50,000 की अतिरिक्त आय भी हो जाती है।

श्री माझी वर्त्तमान में प्रखण्ड के इकलौते ऐसे किसान हैं, जिनके घर में आज भी खाना बायो गैस प्लॉट से बनता है। मत्स्य पालन व्यवसायिक रुप से तो नहीं करते है लेकिन अपने तालाब से लगभग 15,000 तक मछली बेच कर आय कर लेते हैं। आत्मा, जामताड़ा द्वारा वर्ष 2011–12 में श्रीविधि धान से जानकारी प्राप्त कर जिला के कृषकों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनें।

श्री विधि तकनीक धान में खेती में कतार से कतार रखने हेतु उन्होंने स्वयं एक मशीन बनाई जिसका प्रदर्शन जिला स्तरीय किसान मेला में किया गया, जिसके लिए इन्हें पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है। आत्मा के सहयोग से श्री माजी परिभ्रमण विजिट के लिए राज्य एवं राज्य से बाहर जाकर विशेष तकनीकी जानकारी हासिल कर चुके हैं तथा उसे अपने खेतो में अपनाने का पूर्ण प्रयास करते हैं।

49 वर्षीय उदय माझी की पत्नी भी ग्रेजुएट हैं तथा इनकी दो पुत्री हैं। दोनों पुत्रियों को बड़े शहर में शिक्षा प्रदान करा रहे हैं। वर्तमान में इनके जीवकोपार्जन का मुख्यस्रोत खेती एवं पशुपालन है। श्री माजी आज के शिक्षित युवाओं के लिए प्रेरणा है, जो पढ़–लिख जाने के बाद खेती करना अच्छा नहीं समझते है। इन्हें देख कर गाँव के कई युवक शिक्षित होने के बावजुद खेती कार्य में रूझान ले रहे हैं।

Crop/Agriculture Practice	Paddy/Toria (Sarson)
Yield of Crop/ Product	Toria (Sarson)- 6 Qnt./ Acre, Paddy- 20 Qnt./ Acre,
Sale Value	250000
Straw	15000
Input Cost	35000
Labour Cost	25000
Any Other Cost	5000
Net Saving	170000

प्रयास और सफलता

किसान का नाम	अशोक मंडल
पिता / पति का नाम	किति लाल मंडल
ग्राम	जाबरडाहा
पंचायत	पबिया
प्रखण्ड	नारायणपुर
जिला	जामताड़ा
जमीन का ब्यौरा	2.5 एकड़
सिंचित	2 एकड़
असिंचित	0 एकड़
मोबाईल नं०	8969796430
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	Kisan Vikas Fig Samuh, Jabardaha
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	SMAE (2019-20), Udyan Vikas (2019-20)

श्री अशोक मंडल, ग्राम–जबरदहा, पंचायत–पबिया, प्रखण्ड–नारायणपुर, जिला जामताड़ा का रहने वाला मध्यम कृषक है। इनके बचपन में ही इनके पिता जी का देहान्त हो गया था। 2018 में इनकी माँ भी गुजर गई। ये दो भाई हैं, माँ के देहान्त के बाद दोनों भाई अलग हो गये। इनके घर में इनकी पत्नी तिलोतमा देवी और दो बेटी एवं एक बेटा है। पत्नी तिलोतमा देवी भी खेती में सहयोग करती है।

खेती करने से पूर्व अशोक मंडल, सहदेव प्रसाद नर्सिंग होम, भागलपुर में बार्ड बॉय के तौर पर कार्य करते थे। परन्तु ये कार्य इन्हें अच्छा नहीं लगा। अतः भागलपुर में नर्सिंग होम की नौकरी छोड़कर घर आ गये।

उन्होंने घर में आकर खेती शुरु कर दी। परन्तु जो लाभ उसे खेती से मिलना चाहिए था वह मिल नहीं रहा था। वह हताश हो चुके थे। इसी क्रम में आत्मा, जामताड़ा से जुड़ कर प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं राज्य से बाहर परिभ्रमण भी कराया गया। तत्पश्चात् उन्होंने सब्जी उत्पादन के साथ–साथ मुर्गी एवं बत्तख पालन करना प्रारम्भ किया। लगभग दो साल के अन्दर उनके पास अपनी पूँजी जमा हो गई, जिसके कारण अपने बच्चों का भरण–पोषण एवं शिक्षा अच्छी तरह से कर रहे हैं।

वित्तीय वर्ष 2019–20 में SMAE योजना से उनके ग्राम में एक किसान पाठशाला प्रारम्भ किया गया एवं आत्मा की देख–रेख में दिनांक – 15 अक्टूबर, 2019 को उन्नत नस्ल का आलू, प्रभेद–पोखराज, 3 क्विंटल एवं प्रभेद–लाल गुलाब, 3 क्विंटल, 1.5 एकड़ में लगाया गया, जिससे लगभग–56 क्विंटल उपज प्राप्त हुआ, उनके द्वारा प्रति क्विंटल 2500 की दर से कुल 140000 (एक लाख चालीस हजार) रुपये आमदनी प्राप्त हुई।

पुनः उसी खेत में दिनांक – 3 जनवरी, 2020 को 1 एकड़ में आलू बीज, दूसरी बार 4

क्विंटल लगाया गया, जिससे उपज 32 क्विंटल प्राप्त हुआ, और प्रति क्विंटल 2000 की दर से कुल– 64000 (चौसठ हजार हजार) रुपये आमदनी प्राप्त हुई।

10 क्विंटल आलू बीज की दर –	17000
खेत की तैयारी एवं बुआई पर व्यय –	4000
गोबर –	3200
रसायनिक उर्वरक एवं कीटनाशी –	7000
सिंचाई –	4000
अन्य व्यय – (ढुलाई, कोड़ाई, इत्यादि)	8000
कुल खर्च –	43200
कुल आमदनी –	204000
शुद्ध आय –	160800

Crop/ Agriculture Practice	Potato, Farm School/Elephant Footyam (Ol) Udyan Vikash
Yield of Crop/ Product	54Qnt./Acre
Sale Value	20400
Straw	00
Input Cost	35200
Labour Cost	8000
Any Other Cost	00
Net Saving	160800

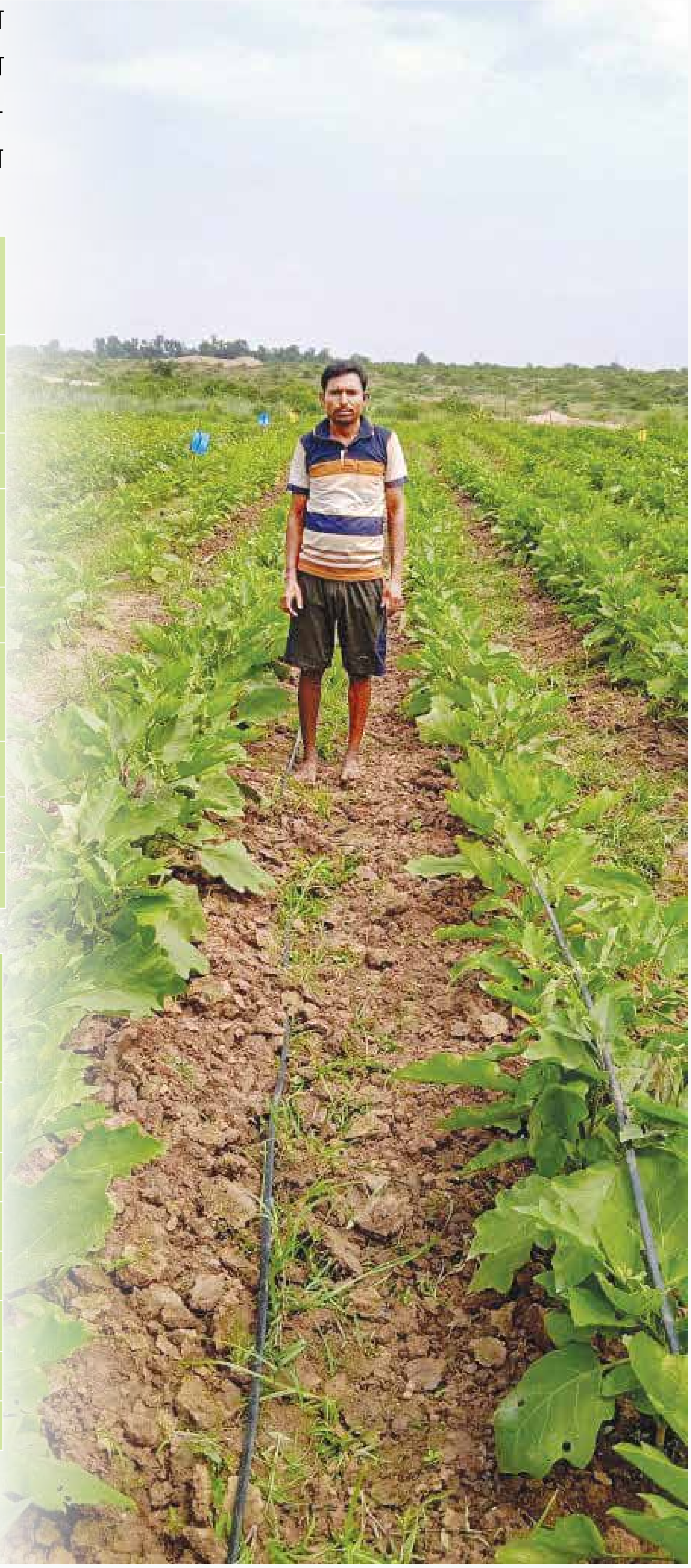

सपने हुए साकार

किसान का नाम	संजू देवी
पिता/पति का नाम	छोटेलाल यादव
ग्राम	बलरोटॉड
पंचायत	लोकाई
प्रखण्ड	लोकाई
जिला	कोडरमा
जमीन का ब्यौरा	3 एकड
सिंचित	1 एकड
असिंचित	2 एकड
मोबाईल नं०	8002136522
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	हाँ
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन तेलहन

कोडरमा जिला अभ्रख नगरी से विख्यात जिसमें कोडरमा प्रखण्ड झुमरी तिलैया अभ्रख राजधानी के लिए मशहूर है लेकिन इसके अलावा अब यह क्षेत्र कृषि क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहा है। इसी क्षेत्र के लोकाई पंचायत जो कोडरमा गिरिडीह रोड पर अवस्थित है। जहाँ बसधरवा की महिला किसान संजू देवी कृषि कार्य में लगी हुई है। पूर्व में यह पंचायत अभ्रख पर निर्भर रहता था, यहाँ केवल धान की खेती होती थी लेकिन अवैध अभ्रख खनन पर रोक होने के कारण धीरे–धीरे लोग पलायन को मजबूर हो गए। किसानों को आत्मा द्वारा कृषि की नई तकनीक प्रणाली एवं कम प्रचार–प्रसार से यहां के किसानो में खेती के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई इसी क्रम में बी०टी०एम० द्वारा संजू देवी के खेत का निरीक्षण करते हुए और उन्हें प्रेरित करते हुए योजना के बारे में जानकारी दी गई। जिस पर संजू देवी तैयार होकर खेती की तैयारी में जुट गई। बी०टी०एम० की सलाह से खेत की तैयारी शुरू की जिसमें उन्हें राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (तेलहन) के अन्तर्गत ब्लॉक चेन टेक्नोलोजी के माध्यम से 2 कि०लो० ग्राम सरसों बीज RH749 दिया गया। संजू देवी द्वारा पहली बार प्रशिक्षण प्राप्त कर जिसमें बी०टी०एम० द्वारा फील्ड का भ्रमण तथा सलाह से संजू देवी बीजोपचार रोग नियंत्रण, कीट, नियंत्रण, सिंचाई आदि सही तरीके से करते हुए काम किया।

संजू देवी द्वारा कुल 1 एकड़ में सरसों की खेती किया गया जिसमें इन्हें 7300 रू० का बचत हुआ और संजू देवी खुश होकर कहती है कि मैं अपनी तरह अपने गाँव में सभी किसानों को तकनीक से खेती के लिए प्रेरित करूंगी और इसके लिए आत्मा एवं सभी आत्मा कर्मी एवं कृषक को दिल से बधाई देती हूँ।

उपज/एकड	200 किलो
किमत/किलो० ग्रा०	70 रू०
इनपूट किमत/एकड	4000 रू०
मजदूरी	1200 रू०
अन्य खर्च	1500 रू०
बचत/एकड	7300 रू०

छोटा प्रयास, बड़ा परिर्वतन

किसान का नाम	राजेन्द्र उराँव
पिता/पति का नाम	बिरसा उराँव
ग्राम	टोंटी (सिमराटोली)
पंचायत	टोंटी
प्रखण्ड	बारियातु
जिला	लातेहार
जमीन का ब्यौरा	5 एकड
सिंचित	3 एकड
असिंचित	2 एकड
मोबाईल नं०	6201391108
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	प्रखण्ड कृषक सलाहकार समिति, बारियातु के सदस्य
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	SAME, PMKSY

मैं राजेन्द्र उरॉव, पिता श्री बिरसा उरॉव, ग्राम–टोटी (सिमरटोला) पंचायत–टॉटी, प्रखण्ड–बारियातु, जिला – लातेहार का मूल निवासी हूँ। टोंटी ग्राम जिला मुख्यालय से लगभग 80 किमी० दूर सुदूरवर्ती इलाके में बसा एक छोटा सा गाँव है। जहाँ सुविधाओं और तकनीक की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। क्योंकि मेरा जन्म ही एक कृषक परिवार में हुआ तो मैंने बचपन से ही अपने माता–पिता को खेतों में काम करते हुए देखा है। मेरे पिता वर्षो से पारम्परिक तरीके से खेती करते आ रहे हैं। मैंने भी वर्षों तक अपने खेतों में पारम्परिक तरीके से खेती की है। पारम्परिक तरीके से खेती करने में अत्यंत श्रम एवं खर्च करना पड़ता था। दिन–रात खेतों में ही मेहनत करते हुए समय बीत जाता था। जिसके कारण परिवार के लिए समय निकाल पाना मुश्किल हो रहा था तथा डीजल तेल की महंगाई और पानी की कमी होने के कारण पारम्परिक खेती कर परिवार चलाना मुश्किल हो गया था। खर्च ज्यादा और आमदनी कम होती थी। एक बार तो ऐसा लगा कि मानो कृषि कार्य को छोड़ कोई दूसरा काम कर लिया जाए। पारम्परिक खेती से आमदनी न के बराबर होती थी। मैं हमेशा सोचता रहता था कि कैसे आमदनी को बढ़ाया जा सके जिससे कि पारिवारिक स्थिति सुचारू रूप से चल सके। तभी मुझे कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) लातेहार के माध्यम से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का अनुसंधान केन्द्र, प्लाण्डू राँची में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। जहाँ मैंने अत्याधुनिक तकनीक से कैसे खेती करें एवं जैविक खेती की ओर विशेष ध्यान देने तथा जैविक खेती में किस तरीके से प्राकृतिक वस्तुओं का प्रयोग किया जाय? इसके बारे में विस्तार से सिखाया

और बताया गया। प्रशिक्षण के दौरान खेती के विभिन्न वैज्ञानिक तरीके जैसे बीजोपचारित कर बीज लगाने से लेकर श्रीविधि से खेती करने की ओर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् आत्मा एवं कृषि विभाग, लातेहार के द्वारा 90 प्रतिशत अनुदान पर ड्रीप इरीगेशन सिस्टम अपने खेत में लगवाया। इसे लगाने के बाद पानी, समय, पटवन में खर्च और डीजल तेल की बचत हुई। जब मैं पारम्परिक तरीके से मिर्च की खेती करता था तब एक दिन में 35–50 किग्रा० मिर्च का उत्पादन ले पाता था। लेकिन जब मैंने सूक्ष्म सिंचाई के माध्यम से खेती करने लगा तब आज एक दिन में 150–200 किग्रा० मिर्च का उत्पादन ले पा रहा हूँ। मैं अपने खेतों में मिर्चा ही नहीं बल्कि खरीफ एवं रबी की फसलें जैसे–राई, मक्का, टमाटर, धान एवं गेहूँ इत्यादि का उत्पादन वैज्ञानिक तरीके से अधिक से अधिक उत्पादन कर रहा हूँ। अब मेरे परिवार की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। अत्याधुनिक तरीके से खेती ने मेरे परिवार के सभी सदस्यों के चेहरे पर खुशी लाने का काम किया है। अब मैं अपने बच्चे और बच्चियों को अच्छी एवं उच्च शिक्षा दिलाने में सक्षम हो गया हूँ। अन्त में तहे दिल से सहायक तकनीकी प्रबंधक, बारियातु तथा आत्मा, लातेहार का सुक्रिया अदा करता हूँ एवं कोटि–कोटि धन्यवाद देता हूँ। जिन्होंने समय–समय पर मेरा तकनीकी मार्गदर्शन किया। आखिर में मैं इतना ही कहूँगा कि –

"मेरा ख्वाब, मेरा सपना, पहचान अभी बाकी है,
सफलता की शुरूआत है, उड़ान अभी बाकी है।"

Crop/Agriculture Practive	मिर्चा / सूक्ष्म सिंचाई तकनीक के माध्यम से मिर्चा की उन्नत खेती
Yield of Crop/ Product	1.5-2.0 qtl. Per Day/Acre
Sale Value	Rs.15.00-20.00/- Per Kg (Wholesale Value)
Straw	-
Input Cost	Rs.25000
Labour Cost	Rs.5000
Any Other Cost	Rs.2000
Net Saving	Rs.90000

सच्ची मेहनत से मिली कामयाबी

किसान का नाम	एमलेन बागे
पिता / पति का नाम	हरदुगन बागे
ग्राम	चीलदिरी
पंचायत	बरवाटाली
प्रखण्ड	चन्दवा
जिला	लातेहार
जमीन का ब्यौरा	3.00 एकड
सिंचित	2.50 एकड़
असिंचित	0.50 एकड
मोबाईल नं०	9631075103
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	सदस्य, मुक्ति महिला मंडल, चीलदिरी, चन्दवा
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	SMAE, PMKSY, NHM

मैं एमलेन बागे, पति स्व० हरदुगन बागे लातेहार जिला के चन्दवा प्रखण्ड अन्तर्गत चिलदीरी गाँव की निवासी हूँ। मैं वर्ष 2004 से समूह से जुड़ी हूँ। समूह से जुड़ने के पश्चात् मुझे एक नई पहचान मिली। जून, 2006 में पति की मृत्यु के बाद घर की हालत खराब एवं दयनीय हो गयी, परिवार चलाना भी मुश्किल हो गया था। फिर मैंने कृषि कार्य को अपनी रोजी–रोटी का जरिया बनाने की सोंची और पिछले कुछ वर्षो तक मैं पारम्परिक तरीके से खेती करती रही। पारम्परिक तरीके से खेती करने से मुझे ज्यादा लाभ नहीं मिल पाता था साथ ही इसमें बहुत ज्यादा परिश्रम भी करना पड़ता था एवं खेती करने में अधिक व्यय वहन करना पड़ता था। एक दिन मैं किसी कार्य हेतु प्रखण्ड मुख्यालय चन्दवा गयी, वहाँ मेरी मुलाकात प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी से हुई। उन्होंने मुझे कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) के द्वारा चलायी जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी एवं मेरे ग्राम स्तर पर जो कृषक मित्र हैं उनके माध्यम से मुझे प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण से संबंधित जानकारी मिली। फिर वर्ष 2016 में आत्मा, लातेहार के जैविक खेती एवं सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली के विषय पर मुझे प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने का मौका मिला। प्रशिक्षण संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् मैं भी जैविक खेती करने की सोची। मेरे पास सिंचाई हेतु एक कुआँ है जिसमें सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली की अधिष्ठापन हेतु कृषि विभाग, लातेहार को आवेदन दी। उसके बाद मैं अपने खेत पर 90 प्रतिशत अनुदान पर सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली का अधिष्ठापन कराया। अब मेरे पास सिंचाई की सुविधा है। कम पानी में अधिक फसल लेने की तकनीक से मैं वर्ष भर अपने खेतों में फसल लगाती हूँ जिससे मुझे सालों भर आमदनी प्राप्त होती है। पारम्परिक खेती की अपेक्षा आधुनिक तरीके से खेती करने से मेरी आय दोगुनी हो गयी है, जिससे मैं आत्म निर्भर बन गयी हूँ और आस–पास के सभी कृषकों को जागरूक कर आत्म निर्भर बनाने की कोशिश कर रही हूँ। वर्तमान में मैं अपने खेत पर बीन्स, बोदी, करेली, नेनुआ, तरबूज आदि की खेती कर रही हूँ। मुझे उद्यान

विभाग, लातेहार से जीवामृत उत्पादन इकाई भी मिली है जिसके कारण जीवामृत तैयार कर मैं अपने फसलों पर छिड़काव करती हूँ जिससे मेरे फसल की गुणवत्ता में वृद्धि हो गई। केंचुआ खाद खुद बनाती हूँ और उसका उपयोग सब्जी की खेती में करती हूँ। रसायनिक खाद एवं रसायनिक दवा का प्रयोग नहीं करने से फसलों की गुणवत्ता के साथ उसका बाजार मूल्य अन्य की अपेक्षा ज्यादा प्राप्त होती है। आज मेरे प्रक्षेत्र में अन्य प्रखण्डों के किसान/महिला समूह परिभ्रमण हेतु आते हैं। मेरी पूरी कोशिश रहती है, जो तकनीक मैं अन्य तकनीकी प्रशिक्षण संस्थानों में जाकर सीखी हूँ और जो मैं अपने खेत पर प्रयोग करती हूँ उन तकनीकों को बाकी किसान/महिला समूह को भी सीखाऊँ जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो। अन्त में मैं अपने नम आँखो से देशवासियों से विनती करती हूँ–

एमलेन बागे के प्रक्षेत्र में लगा हुआ बोदी का फसल

"ये अन्न नहीं हम किसानों की खून पसीनों के द्वारा धरती से उपजा सोना है,
इससे सभी जरूरतमंदों का होगा पेट भरण, अन्न को बर्बाद नहीं करना है।"

एमलेन बागे के द्वारा की गई पपीता की नर्सरी

Crop/ Agriculture Practive	बोदी, करैला, नेनुआ, बीन्स, तरबुज, पपीता का नर्सरी/केंचुआ खाद एवं जीवामृत उत्पादन के द्वारा सब्जी की जैविक खेती
Yield of Crop/ Product	Karela-35 Kg/Day, Bodi-25 Kg/Day, French beans-20 Kg/Day, Watermelon-5-10 Kg/Day
Sale Value	Rs.20-25 Per Kg
Straw	
Input Cost	Rs.12000
Labour Cost	Rs.9000
Any Other Cost	Rs.5000
Net Saving	Rs.65000

एकता में ही बल है

किसान का नाम	शांति बाड़ा
पिता/पति का नाम	रूप नरायण भगत
ग्राम	बगडू/जामुनटोली
पंचायत	बगडू
प्रखण्ड	किस्को
जिला	लोहरदगा
जमीन का ब्यौरा	50 डी0
सिंचित	–
असिंचित	–
मोबाईल नं०	6207490584
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	हाँ
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	

मैं शांति बाड़ा, रूप नारायण भगत, प्रखण्ड–किस्को के बगडू ग्राम निवासी हूँ। मैं आठवीं तक पढ़ाई की हूँ। मेरे पास 50 डिसमील कृषि योग्य भूमि है। पहले मैं धान की खेती ही कर पाती थी। क्योंकि सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। पारंपरिक विधि से खेती होने के कारण धान की भी उपज बहुत कम होती थी। इससे गंभीर आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इसके कारण मुझे मजदूरी के लिए घर से बाहर जाना पड़ता था।

वर्ष 2013 में मैं आत्मा संस्था से जुड़ी। काम के प्रति समर्पण भावना को देख कर मुझे कृषक मित्र के रूप में चुना गया तथा मेरा लगातार विभाग से संपर्क बढ़ता गया। BTM/ATM से भी मेरा संपर्क बढ़ता गया और मुझे कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी मिलती गई। इसी बीच मुझे आत्मा संस्था से प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कार्यक्रम में कृषकों के साथ पलाण्डु एवं बिरसा कृषि विश्वविद्यालय जाने का मौका मिला। वहाँ खेती की नई–नई तकनीकों को सीखने एवं कृषकों को सिखाने का मौका मिला। साथ ही गाँवों में भी आत्मा द्वारा कृषक पाठशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से मुझे मिट्टी के स्वास्थ के बारे में जानकारी मिली। हमारे यहाँ के कृषक सिर्फ यूरिया एवं डी० ए० पी० ही खेतों में डालते हैं। प्रशिक्षण में भाग लेने से मुझे इसके दुष्परिणाम के बारे में जानकारी मिली, और इससे कैसे बचा जा सकता है, इसके बारे में भी जानकारी मिली।

कृषक मित्र होने के कारण विभाग द्वारा मुझे अपनी जिम्मेदारी एवं कर्तव्यों के बारे में बार–बार सचेत किया जाता रहा, तो मैंने भी अपनी जिम्मेदारी समझ कर रसायनिक उर्वरकों का कम प्रयोग करने हेतु कृषकों को जागरूक करने लगी।

प्रशिक्षण में ही मुझे पता चला कि गोबर खाद/केंचुवा खाद के अधिक प्रयोग से ही मिट्टी के स्वास्थ को बनाया जा सकता है तथा इसके परिणाम भी अति लाभदायक होते हैं। मुझे विभाग

द्वारा बतलाया गया कि किसी भी नई तकनीक को जब तक हम कृषक मित्र खुद नहीं करेंगे तो दूसरे कृषकों को कैसे समझा पायेंगे। इसलिए मैंने सिर्फ 1 वर्मी बेड से केंचुआ उत्पादन का कार्य शुरू किया। मैंने अपने खेतों के अपशिष्ट पदार्थों को जमा कर गड्ढे में डालना शुरू किया और फिर प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारी के अनुसार केंचुआ खाद तैयार करना शुरू किया। दो महीनों में मेरा केंचुआ खाद पूर्ण रूप से तैयार हो गया। मैं सबसे पहले अपने खेतों में केंचुआ खाद का प्रयोग किया। इसका जो परिणाम मुझे मिला वो मेरी सोच से भी ज्यादा रहा। मेरी सब्जी अन्य किसानों की सब्जियों की तुलना में ज्यादा चमकदार थी। मैंने टमाटर, फूलगोभी, फ्रेंचबीन, बोदी, मिर्च आदि में इसी खाद को डाला, इससे सब्जी अच्छी थी और बाजार मूल्य से भी कुछ ज्यादा मुझे मिला साथ ही सब्जी जल्द खराब भी नहीं होती थी।

मुझे देखकर अगल–बगल के कृषकों/महिला समूहों में भी वर्मी कंपोस्ट डालने की प्रेरणा मिली। इससे वर्मी कम्पोस्ट की मांग मुझसे कृषकों द्वारा की जाने लगी। एक बेड होने के कारण मैं उन्हें वर्मी कम्पोस्ट उपलब्ध नहीं करा सकती थी। फिर मैंने सोचा क्यों नहीं, मैं और बेड की संख्या बढ़ा लूँ और खुद केंचुआ खाद उत्पादन करना शुरू करूँ। फिर मैंने धीरे–धीरे वर्मी बेड तैयार किया।

आज मैं वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन कर रही हूँ और मेरा वर्मी कम्पोस्ट 56/KG की दर से बेच रही हूँ। विभिन्न संस्था द्वारा मेरा वर्मी कम्पोस्ट का उठाव हो जाता है, और मुझे नगद राशि मिल जाती है। आज वर्मी कम्पोस्ट से 60,000 रु तक की आमदनी प्राप्त हो रही है। मैं सभी महिलाओं से एवं कृषकों को सुझाव देना चाहती हूँ कि आप भी केंचुआ खाद का प्रयोग खेती में करना शुरू करें, इसमे मुनाफा ही मुनाफा है।

	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के बाद
फसल/कृषि पद्धति	रसायनिक खाद	केंचुवा खाद
फसल का उत्पादन राई		8 वर्मी बेड
बिक्री मूल्य		60,000
Straw (पुआल)		
लागत मूल्य (input cost)		20,000
मजदुरी लागत	स्वयं	स्वयं
अन्य खर्च		20,000
अंतिम बचत		40,000

बेहतर से बेहतर की तलाश

किसान का नाम	सोफी कुजूर
पिता / पति का नाम	अनिल कुजूर
ग्राम	उत्तका
पंचायत	कैरो
प्रखण्ड	कैरो
जिला	लोहरदगा
जमीन का ब्यौरा	5 एकड़
सिंचित	2.5 एकड़
असिंचित	2.5 एकड़
मोबाईल नं०	9304179855
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	बेला सहायता समूह
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	-

मै सोफी कुजूर, पिता स्व० पीटर कुजूर, ग्राम– उत्तका, पंचायत– कैरो, प्रखण्ड–कैरो जिला– लोहदगा का निवासी हूँ। मेरा जन्म 24.04.1966 को हुआ। तीन बहनों में मैं सबसे छोटी हूँ। राँची में रहकर ही मैने 1985 में मैट्रिक परीक्षा दी, उसके बाद इण्टर और स्नातक की परीक्षा गोस्नर कॉलेज, राँची से पास की और वहीं पर रहकर प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने लगी। सफलता नहीं मिलने पर वापस अपने गाँव आ गई। घरवालों ने 1997 में मेरी शादी गाँव के ही अनिल कुजूर से कर दी गई। मैं उनके साथ खेती कार्यों में सहयोग करने लगी। हमारा खुद का लगभग 5 एकड़ जमीन है जिसपर हमलोग खेती करते है। 2000 ई० से मैं महिला मण्डल से जुड़कर अपनी आजीविका बढ़ाने का प्रयास करने लगी। शुरू से ही मुझे कृषि कार्य में रूचि थी, इसी दौरान वर्ष 2016 से मैं प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक के सम्पर्क में आयी और खेती के नये तकनीकों के बारे में जानने लगी, बराबर उनके सम्पर्क में रहने लगी। बीजोपचार, मिटटी जॉच, चूना के प्रयोग के महत्व को जाना। साथ ही श्रीविधि से धान फसल की खेती करने के लिए मैं प्रयास करने लगी।

मेरी कृषि कार्य में जिज्ञासा को देखते हुए वर्ष 2019 में आत्मा द्वारा मेरे खेत में कृषक पाठशाला का आयोजन किया गया। जिससे आत्मा के द्वारा सही समय पर मुझे टमाटर बीज एवं कीटनाशी दवा उपलब्ध कराया गया। इस पाठशाला के तहत टमाटर की खेती कर उत्पादकता में वृद्धि हुई। टमाटर की खेती अधिकांश किसान परम्परागत विधि से करते हैं। पाठशाला में बताये गये तकनीक से इस बार हमने खेत को तैयार किया और बीज का बीजोपचार, पौंधों का उपचार एवं नर्सरी उत्पादन पर विशेष ध्यान देते हुए वर्मी कम्पोस्ट जैविक खाद्य का प्रयोग किया। जिसका प्रभाव पड़ा एवं बीजों में लगभग शतप्रतिशत अंकुरण हुआ, जड़ों का अच्छा विकास हुआ। पौधों में रोग रोधक क्षमता बढ़ी, जिससे कीट एवं बीमारियों का प्रकोप नहीं हुआ एवं फल पुष्ट हुए। समय–समय पर पाठशाला चलने के कारण उचित मार्गदर्शन मिलता रहा।

उत्पादन पश्चात् लगभग 118.10 क्विंटल उपज प्राप्त हुआ, जिसमें शुद्ध आय लगभग 215000/– (दो लाख पन्द्रह हजार रूपये) की प्राप्ति हुई। जिससे हमारी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई। अब इसी तकनीक द्वारा मैं अन्य किसानों को भी खेती करने की प्रेरणा देती हूँ। ताकि अन्य किसान भी अपनी आय में वृद्धि कर सके। मुझे और भी प्रशिक्षण की जरूरत है, ताकि मैं अपने काम को और भी निपुण तरीके से कर सकूँ।

परियोजना निदेशक, आत्मा/उप परियोजना निदेशक, आत्मा को अपनी ओर से धन्यवाद देती हूँ।

केन्द्रीय/राजकीय स्कीम का नाम जिसमें कृषक द्वारा प्रयोग किया गया।		
	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के बाद
फसल/कृषि पद्धति	टमाटर	टमाटर
फसल का उत्पादन राई	60.00 क्विंटल	118.10 क्विंटल
बिक्री मूल्य	1,15,000.00	2,50,000.00
Straw (पुआल)		
लागत मूल्य (input cost)	25,000.00	20,000.00
मजदुरी लागत	15,000.00	15,000.00
अन्य खर्च		
अंतिम बचत	75,000.00	2,15,000.00

महिला किसान का आत्मविश्वास

किसान का नाम	जया देवी
पिता / पति का नाम	लालचन तुरी
ग्राम	सेमराटांड़
पंचायत	सीरम
प्रखण्ड	पेशरार
जिला	लोहरदगा
जमीन का ब्यौरा	5 एकड़
सिंचित	3 एकड़
असिंचित	2 एकड़
मोबाईल नं०	9430194491
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	–
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	–

मैं जया देवी, पति– लालचन तुरी, ग्राम सेमराटांड़, पोस्ट– मक्का, पंचायत–सिरम, प्रखण्ड– पेशरार का निवासी हूँ। बचपन से ही मेरे माता–पिता की आर्थिक स्थिति खराब रही है। मेरे पिता का नाम श्री मुना तुरी और माता का नाम जिखो देवी है। माता–पिता की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण मेरी प्राथमिक शिक्षा मेरे गाँव के सरकारी स्कूल में हुई, मेरे माता–पिता के ऊपर 9 परिवारों की जिम्मेवारी के कारण आर्थिक स्थिति और भी अधिक खराब हो गई। और इसी बीच मुझे कृषि कार्य में रुची आयी। इसी दौरान मेरी शादी हो गयी और इसी बीच में 2018 में आत्मा लोहरदगा के पेशरार प्रखण्ड अंतर्गत प्रखण्ड तकनीकी एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक के सम्र्पक में आयी, तब कृषि से संबंधित नये तकनीकी को अपना कर अपने खेतों में खेती करने का फैसला किया। आत्मा संस्था के द्वारा बताये गये तकनीक से उत्साहित होकर 2019 में कृषक मित्र बन गयी।

2019 में भी अपने खेतों में श्री विधि से धान की खेती एक एकड़ में की, लेकिन उस समय पूरी जानकारी नहीं होने के कारण पैदावार में कुछ कमी आ गयी थी लेकिन 2020 में एक कृषक पाठशाला का आयोजन किया गया। जिसमें कृषि कार्यालय आत्मा के द्वारा सही बीज, खाद और दवा उपलब्ध कराया गया और कृषक पाठशाला में श्री विधि से धान की खेती करने पर मुझे बहुत अधिक मुनाफा हुआ। इससे मेरे गाँव के कुछ किसानों ने देखा और उनकी इच्छा हुई, और श्री विधि से धान लगाने का निर्णय किया। कृषक पाठशाला के बाद इन खेतों में रबी के मौसम में गेहूँ, चना, मूँगफली और सब्जी की खेती भी भरपूर मात्रा में किया गया है। इस प्रकार विभिन्न सब्जी की खेती करते हैं। मेरी वार्षिक आमदनी काफी अच्छी रही जिससे हमारा जीवन स्तर भी सुधर गया है।

केन्द्रीय/राजकीय स्कीम का नाम जिसमें कृषक द्वारा प्रयोग किया गया।		
	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के बाद
फसल/कृषि पद्धति	धान	सब्जी (मिर्चा, भिण्डी एवं नेनवा)
फसल का उत्पादन राई	25 क्वींटल	20 क्वींटल
बिक्री मूल्य	30000	70000
Straw (पुआल)		
लागत मूल्य (input cost)	2400	
मजदुरी लागत	6000	6000
अन्य खर्च	4000	4000
अंतिम बचत	17600	60000

चना ने बढ़ाई, किसान विनोद बैठा की कमाई

किसान का नाम	बिनोद बैठा
पिता / पति का नाम	स्व0 मनदीप बैठा
ग्राम	लाडी
पंचायत	झरीवा
प्रखण्ड	चैनपुर
जिला	पलामू
जमीन का ब्यौरा	8 हेक्टेयर
सिंचित	6 हेक्टेयर
असिंचित	2 हेक्टेयर
मोबाईल नं०	9123113239
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	ATMA
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	ATMA. NFSM (2019-20)

सामाजिक विषय से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने वाले विनोद बैठा को सरकारी नौकरी नहीं मिलने पर अपने पिताजी के साथ खेती बारी में हाथ बटाते थे लेकिन कुछ दिनों के बाद ही पिताजी का निधन हो गया, जिसके कारण वे अपने पिताजी से बहुत कुछ खेती–बारी का गुर नहीं सीख पाये। आत्मा, पलामू के माध्यम से लादी गांव में ही कृषक पाठशाला का कार्यक्रम चल रहा था, कृषक पाठशाला में चयनित किसानों में से एक किसान जिनका नाम विरेन्द्र बैठा था, जिसने विनोद बैठा को कृषक पाठशाला में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया, जब कृषक पाठशाला का क्लास शुरू हुआ, वह किसान बाहर खड़ा होकर तकनीकी बातों को सुन रहा था और पॉकेट डायरी में कुछ लिख रहा था। अचानक प्रशिक्षक की निगाह उनपर पड़ी तो परिचय पूछा और बाद में कृषक पाठशाला में शामिल किया गया, आत्मा, पलामू के सौजन्य से वह गांव NFSM योजना अंतर्गत क्लस्टर प्रत्यक्षण के लिए चयनित था। बी०टी०एम० एवं ए०टी०एम० की मदद से क्लस्टर प्रत्यक्षण के लिए किसानों की सूची में उनका नाम चयनित किया गया। 1 हेक्टेयर में प्रत्यक्षण हेतु 70 कि0ग्रा0 JAKI- 9218 चना का बीज दिया गया। बीज के साथ डोलोमाइट जिप्सम, राइजोबियम, ट्राइकोर्डमा, पेंडीमिथिलिन नीम तेल, क्यूनलफॉस तथा अन्य माईक्रो न्यूट्रियन्ट दिया गया।

2.5 एकड़ प्रत्यक्षण वाले प्लाट में खेत तैयार करते समय 10 टन गोबर, यूरिया 45 किग्रा SSP 260 कि०ग्रा० तथा 35 कि०ग्रा० पोटाश दिया गया।

सर्वप्रथम उन्होनें बीज को F.I.R. (Fungicide, Insectivide, Rhizobium) विधि से उपचारित किया तथा हल के माध्यम से लाईन विधि द्वारा 20 नवंबर 2019 को बीज को खेत में डाला गया। बीज डालने के 48 घंटे के अंदर पेंडीमिथिलिन खर पतवार नाशक दवा का प्रयोग किया गया, ताकि प्रत्यक्षण वाले प्लॉट में घास–पात नहीं उगे। Fusarium Wilt (Bacterial Blight] Root and Stem Rot के लिए कार्बेनडिजम तथा मेटालैकसिल–मैंकोजेब का छिड़काव किया गया, वहीं Pod Borer और Cut worm के लिए नीम ऑयल तथा क्यूनल फॉस का स्प्रे किया गया। 2.5 एकड़ खेत में 90000 का मुनाफा हुआ। ये अपने गांव में किसानों का समूह बनाकर आत्मा पलामू द्वारा दिये गये तकनीकी जानकारी को साझा करते हैं तथा गांव के किसान भी तकनीक का फायदा उठाकर अधिक उपज लेते हैं।

Crop/Agriculture Practive	Bengal gram	
	Line Sowing	Broadcasting Sowing
Yield of Crop/ Product	7 Qt./Acre	3.5 Qt. / Acre
Sale Value	28000	14000
Straw	0	0
Input Cost	5600	4500
Labour Cost	3000	2000
Any Other Cost	2500	1900
Net Saving	16900	5600

दलहन की खेती से आयी हरियाली

किसान का नाम	गोहरी देवी
पिता / पति का नाम	धनेश्वर महतो
ग्राम	हुहुवा
पंचायत	वार्ड 27
प्रखण्ड	रामगढ
जिला	रामगढ
जमीन का ब्यौरा	2 हेक्टेयर
सिंचित	1 हेक्टेयर
असिंचित	1 हेक्टेयर
मोबाईल नं०	9122737651
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	नहीं
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	एक्सटेंशन रिफॉर्म्स योजना अर्न्तगत

मैं गोहरी देवी रामगढ़ प्रखण्ड का हुहुवा गांव की निवासी हूँ तथा कई सालों से पारम्परिक तरीके से खेती करती आ रही हूं। यहां सब्जी की खेती गांव वाले कर रहे थे किंतु यहां तेलहन की खेती के प्रति गांव के कृषकों का रूझान कम था। प्रत्यक्षण कार्य के पूर्व सरसों की खेती से साल भर का तेल भी नहीं पूरा हो पाता था। परन्तु कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) प्रखण्ड – रामगढ़ के सहायक तकनीकी प्रबंधक श्री नीरज कुमार सिन्हा ने इस गांव में प्रत्यक्षण का कार्य करा कर तेलहन की खेती के लिए किसानों को प्रेरित किया। इस साल 2019–20 में प्रत्यक्षण कार्य के

लिए मुझे आत्मा की ओर से सरसों बीज उपलब्ध कराया गया तथा नई तकनीक अपनाकर खेती की गई। मेरी उम्र 60 साल है। मैं अपने पति धनेष्वर महतो के सहयोग से सरसों फसल का कम लागत में अधिक उत्पादन करके पूरी तरह संतुष्ट हूँ। खाने के लिए पूरे साल का तेल रखने के बाद भी बीज बेचकर अच्छी आमदनी की प्राप्ति हुई और आय में भी वृद्धि हुई है। इसके लिए मै आत्मा, रामगढ़ की आभारी हूँ। गांव की अन्य महिला किसान भी अच्छी उपज देख कर उत्साहित हैं। मैं आगे भी आत्मा के द्वारा अरहर, मसूर, उरद एवं अन्य फसलों की खेती की तकनीकी जानकारी लेने की इच्छुक हूँ। ताकि उपज में वृद्धि कर आमदनी भी बढ़ा सकूँ।

	Before	After
Crop/Agriculture Practive	सरसो	सरसो
Yield of Crop/ Product	3.5 क्विंटल	4.3 क्विंटल
Sale Value	14875	19780
Straw		
Input Cost	5300	2000/–
Labour Cost	5850	2400/
Any Other Cost	–	-
Net Saving	7575	11530

समेकित कृषि से किसान बना आत्मनिर्भर

किसान का नाम	निर्मल प्रसाद
पिता / पति का नाम	स्व० लखन प्रसाद
ग्राम	छोटकीपोना
पंचायत	बोरोविंग
प्रखण्ड	चितरपुर
जिला	रामगढ़
जमीन का ब्यौरा	2.5 एकड़
सिंचित	2 एकड़
असिंचित	0.5 एकड
मोबाईल नं०	9835714598
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	न्यू जागृति किसान क्लब
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	Extension Reforms 2019-20

मैं निर्मल प्रसाद, ग्राम–छोटीपोना, पंचायत–बोरोबिंग, प्रखण्ड– चितरपुर, जिला रामगढ़ का निवासी हूँ। कृषि हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है और कृषि के बिना हमारा जीवन अधूरा सा लगता है। हमारे गाँव की अधिकांश आबादी कृषि पर निर्भर है। मेरा परिवार भी कृषि पर निर्भर है, कृषि के अतिरिक्त आय का कोई दूसरा स्रोत नहीं है। खेती करना मेरा मजबूरी थी क्योंकि इसके सिवा मेरा कोई चारा नहीं था। तभी मैं आत्मा के सम्पर्क में आया। आत्मा के उप परियोजना निदेशक ने मुझे समेकित कृषि प्रणाली अपनाने को कहा और मुझे समेकित कृषि प्रणाली के बारे में विस्तार से समझाया। उन्होंने मुझे बताया कि कृषि के विभिन्न उद्यम फसल उत्पादन, पशु पालन, फल–सब्जी उत्पादन, मछली पालन, वानिकी इत्यादि एक साथ किया जाय, क्योंकि सभी एक दूसरे के पूरक हैं जिससे पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए संसाधनों की क्षमता, उत्पादकता के साथ आमदनी में वृद्धि होगी।

मैं समेकित कृषि के फायदे के बारे में जानकर इसे अपनाने का सोचा फिर प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के द्वारा हमारे यहाँ गोष्ठी के माध्यम से इस विषय पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई। इन्होंने हमारे प्रक्षेत्र का निरीक्षण किया और आश्वासन दिया कि आप समेकित कृषि को अपनायें और मैं समय–समय पर आपके प्रक्षेत्र का भ्रमण करती रहूँगी। मैंने इनकी देख–रेख में समेकित कृषि की शुरूआत की। शुरूआती दौर में फसल उत्पादन के साथ–साथ सब्जी उत्पादन एवं बकरी पालन से शुरूआत की तथा पहले मैं एक फसल लेने के बाद खेत को खाली छोड़ देता था, लेकिन अब फसल चक्र अपनाकर सालोभर कृषि कार्य करता रहता हूँ। आज मेरा पूरा परिवार खुशहाल है और मैं आत्मनिर्भर हूँ और मेरी आर्थिक स्थिति भी अच्छी हुई है। अब कृषि कार्य करना मेरी मजबूरी नहीं है बल्कि मेरा जुनून हो गया है। अब मैं इस तकनीक को दूसरे किसानों तक पहुँचा रहा हूँ और मेरी कोशिश है कि अधिक से अधिक किसान इससे लाभान्वित हो। मेरी इस सफलता का श्रेय आत्मा, रामगढ़ को जाता है, जिसके वजह से मैं आत्मनिर्भर हो पाया हूँ।

क्षेत्रावार लागत मूल्य, प्राप्त आमदनी एवं शुद्ध आय का विवरण (रूपये में)

क्र० सं०	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण		अपनाने के बाद का विवरण	
		प्रक्षेत्र–1	प्रक्षेत्र–2	प्रक्षेत्र–1	प्रक्षेत्र–2
1	Crop/Agriculture Practive	सरसों	टमाटर	सरसों	टमाटर
2	Yield of Crop/ Product	3 क्विं० / एकड़	110 क्विं० / एकड	4 क्विं० / एकड	215 क्विं० / एकड
3	Sale Value	4200 / क्विं० कुल– 12800	900 / क्विं० कुल– 99000	4425 / क्विं० कुल– 18550	900 / क्विं० कुल– 193500
4	Straw	-	-	-	-
5	Input Cost	3600	12000	3800	24000
6	Labour Cost	2050	13500	1850	12500
7	Any Other Cost	1650	2000	1900	1800
8	Net Saving	5500	71500	10800	155200

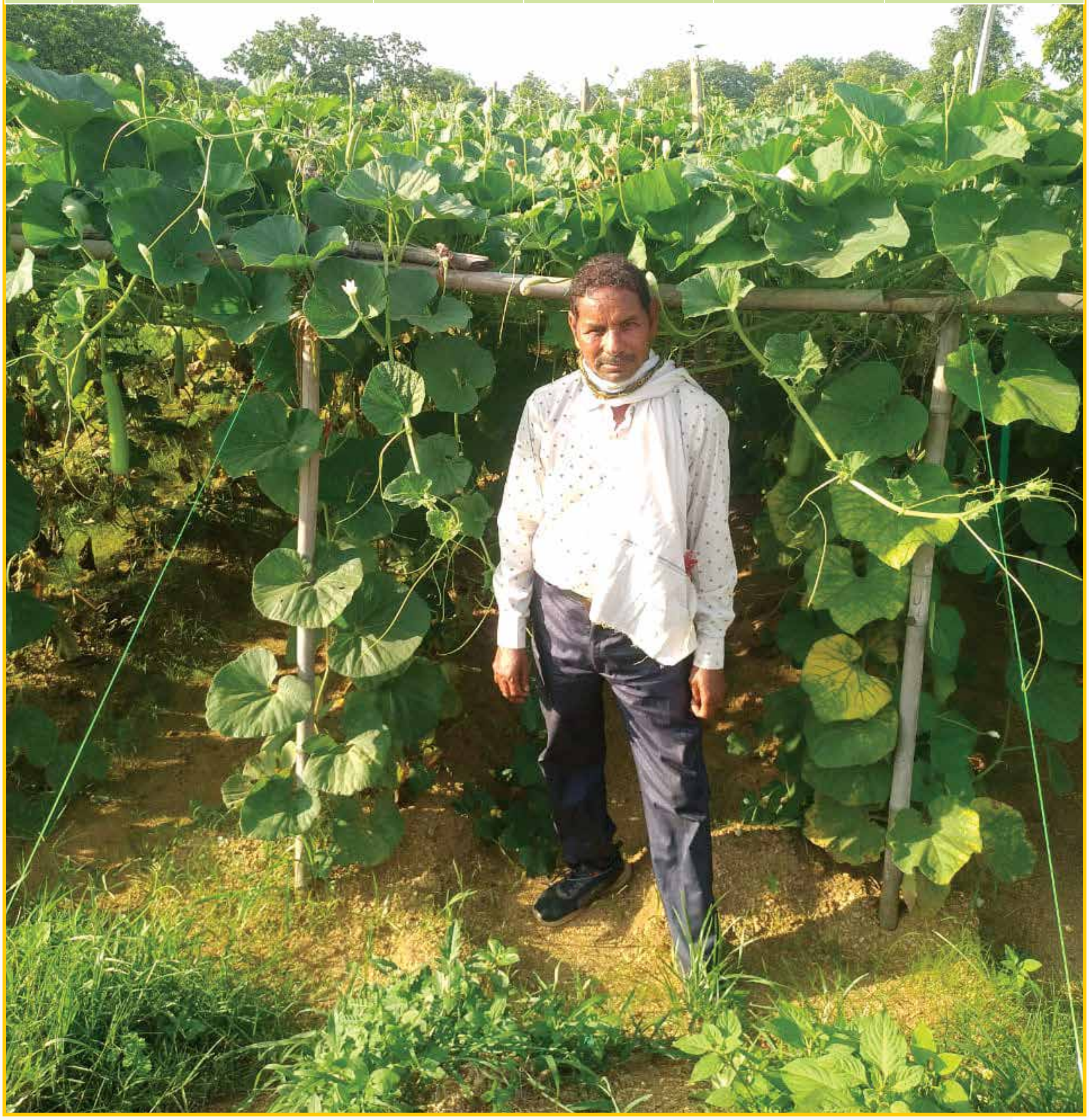

नई तकनीक से किसान खुशहाल

किसान का नाम	जगरनाथ महतो
पिता / पति का नाम	–
ग्राम	बेयांग
पंचायत	कुल्ही
प्रखण्ड	दुलमी
जिला	रामगढ़
जमीन का ब्यौरा	2.5 एकड़
सिंचित	2 एकड़
असिंचित	0.5 एकड
मोबाईल नं०	-
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	–
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	Extension Reforms 2019-20

श्री जगरनाथ महतो, ग्राम–बेयांग, पंचायत–कुल्ही, प्रखण्ड– दुलमी, जिला– रामगढ़ के एक प्रगतिशील किसान हैं। वर्ष 2019–20 में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण, रामगढ़ द्वारा एक्सटेंशन रिफोर्म्स योजना (SMAE) के फसल प्रत्यक्षण योजनान्तर्गत फसल–सरसों का वैज्ञानिक विधि से उत्पादन किया। प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, दुलमी के सहयोग से इन्होंने फसल–सरसों हेतु चयनित 1 एकड़ भूमि की मिट्टी जाँच एवं बीजोपचार कर सरसों बीज की बुवाई की। सहायक तकनीकी प्रबंधक द्वारा फसल अवधि में निरीक्षण तथा प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक द्वारा रोग एवं कीट प्रबंधन तथा भंडारण का प्रशिक्षण दिया गया।

इस किसान ने प्रशिक्षण का उपयोग कर अपने लगन से एक एकड़ भूमि में सरसों (किस्म पी.एम–30) की खेती से कुल 4.2 क्विंटल उपज प्राप्त की है। जगरनाथ महतो ने बताया कि पहले वह इस भूमि में आलू की फसल लेते थे जिससे उन्हें मात्र 6 से 8 हजार रूपये की आमदनी होती थी। कभी–कभी झुलसा रोग का प्रकोप होने से आलू का उत्पादन सामान्य उत्पादन से आधे से भी कम होती थी। सरसों की फसल में कीट–व्याधियों का प्रकोप नगन्य रहा। स्थानीय बाजार कुल्ही एवं गोला में सरसों बीज को 5500 रूपये प्रति क्विंटल की दर विक्रय कर इन्हें 23100 रूपये प्राप्त हुआ है। खेती करने में कुल लागत 13860 रूपये कुल मुनाफा 9300 रूपये प्राप्त हुआ। एक्सटेंशन रिफोर्म्स योजना (SMAE) के इस प्रत्यक्षण को देखकर आस–पास गाँव के किसान भी इस तेलहनी फसल को लगाने हेतू प्रेरित हुए हैं।

ईमानदारी से की गई मेहनत कभी बेकार नहीं जाती

किसान का नाम	कविता देवी
पिता / पति का नाम	गोपाल सिंह
ग्राम	गडगामा
पंचायत	अप्रोल
प्रखण्ड	बोरियो
जिला	साहेबगंज
जमीन का ब्यौरा	5 एकड़
सिंचित	5 एकड़
असिंचित	0
मोबाईल नं०	9934228088
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	स्वयं सहायता समूह
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	आत्मा प्रत्यक्षण (2020-21)

ईमानदारी से की गई मेहनत कभी बेकार नहीं जाती है, अगर सही मार्गदर्शन में सही दिशा में पूरी लगन के साथ काम किया जाय तो सफलता जरुर मिलती है। कुछ ऐसी ही सफलता की कहानी है कविता देवी की, जिन्होंने अपनी कड़ी मेहनत के दम पर सफलता हासिल की है और टमाटर की खेती से अपना आमदनी बढ़ाकर अपनी परिवार का भरण पोषण सही ढंग से कर रही है।

यूँ तो टमाटर की खेती वर्ष भर की जा सकती है। यह उन लोगों के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प है जो वर्ष में चार बार व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण फसल की कटाई करना चाहते हैं। जहां टमाटर की खेती लगभग सभी मौसमों में की जाती है, वहीं सर्दी या वसंत ऋतु में खेती करने पर किसान को अच्छी पैदावार मिल सकती है। वर्षा ऋतु में इसकी खेती के लिए सबसे अच्छा मौसम जून से जुलाई के महीनों में होता है, वसंत ऋतु में इसकी खेती अक्टूबर से नवंबर में की जाती है; और गर्मी के मौसम में टमाटर की खेती जनवरी से फरवरी तक की जाती है।

टमाटर की खेती की कुल अवधि लगभग 110 से 140 दिन है। हालांकि, बुवाई के 50 से 60 दिनों के बाद उपज शुरू हो जाती है। पहली तुड़ाई की तारीख से हर 10 से 15 दिनों के अंतराल पर तुड़ाई की जा सकती है। एक किसान अंतिम फसल तक लगभग पांच बार तुड़ाई कर सकता है।

साहेबगंज जिले के बोरियो प्रखंड के गड्गामा के कविता देवी ने टमाटर की खेती करने की ठानी और प्रयास करना शुरू किया और अंततः प्रयास सफल रहा। कविता देवी अपने पति गोपाल सिंह और अपने तीन बच्चों नंदनी कुमारी (10 वर्ष), गौरव सिंह (8 वर्ष) और राजवीर सिंह (6 वर्ष) के साथ अपने ग्राम में रहती हैं। इनकी बड़ी बेटी नंदनी छठा वर्ग में पढ़ती है।

कविता के माता–पिता गरीब थे और इन्होंने गरीबी का दंश झेलते हुए अपनी शिक्षा कक्षा पांचवी तक हासिल की, पर इनकी बातों को मानें तो पूर्व में इनकी स्थिति दयनीय थी। जिससे इनके

परिवार का भरण पोषण सही ढंग से नहीं हो पाता था। अपने खेतों में धान, गेहूं, चना, सरसों, मसूर एवं थोड़ा बहुत बैगन, टमाटर और पत्तीदार सब्जी इत्यादि की खेती किया करती थी। समय–समय पर जानकारी हेतु आत्मा कार्यालय के संपर्क में भी रही।

कृषि के क्षेत्र में इनका जुड़ाव एवं लगनशील रहने, समय–समय आत्मा की अन्य गतिविधियों जैसे किसान गोष्ठी एवं परिभ्रमण इत्यादि में भाग लेने के कारण इनका ज्ञानवर्धन हुआ। आत्मा के संपर्क में आने के बाद इनका रुझान सब्जी की खेती की ओर हुआ। कृषि के प्रति इनका लगाव और रूचि को देखते हुए इन्हें चयन कर आत्मा की ओर से बर्ष 2020–21 में सब्जी की खेती के लिए टमाटर का बीज दिया गया। आत्मा की ओर से समय–समय पर खेतों का परिभ्रमण कर खाद एवं उर्वरक का सदुपयोग, कीट व्याधि नियंत्रण, और बाजार के अनुसार अपने खेती किसानी को बढ़ाने हेतु आवश्यकतानुसार जानकारी दी गई।

पहले कविता देवी अपने फसलों एवं सब्जियों का कम उत्पादन होने के फलस्वरूप नजदीक के बाजार में बोरियों में सब्जियाँ बेचने जाती थी, पर आज आसपास के व्यापारी खुद इनके घर आकर सब्जी ले जाते हैं। यह अपने साथ अपने ग्राम और आस पास की महिला को भी अपने जैसा बनने हेतु प्रोत्साहित करती हूं।

कविता देवी मेहनती महिला किसान होने के साथ–साथ तकनीक को जल्दी समझ कर उसे ससमय अपना लेती है। अब ये सब्जी टमाटर में लगनेवाले मुख्य कीट, रोग एवं कीट प्रबंधन के बारे में जान चुकी है। अब इन्हें पता हो गया है कि सब्जी की खेती से आमदनी दुगुनी हो जाती है इस प्रकार ये स्वंय प्रेरित होकर दूसरे को प्रेरित कर रही है। इसी प्रकार इनके सीखने की उत्सुकता, कड़ी मेहनत, सकारात्मक रवैया और समझदारी इन्हें महिला मॉडल किसान बनाती हैं।

	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के बाद
फसल/कृषि पद्धति	टमाटर पराम्परागत पद्धति से	वैज्ञानिक पद्धति
फसल का उत्पादन	45 Q/ACRE	70 Q/ACRE
बिक्री मूल्य	54000	84000
लागत मूल्य	30630	40630
मजदुरी लागत	15000	18800
अन्य खर्च	500	1000
अंतिम बचत	23370	43370

उन्नत खेती ने दिलाई पहचान

किसान का नाम	शबनम लकड़ा
पिता/पति का नाम	साजिद लकड़ा
ग्राम	थेथई टांगर
पंचायत	पाकरटांड
प्रखण्ड	पाकरटांड
जिला	सिमडेगा
जमीन का ब्यौरा	7 एकड़
सिंचित	4 एकड़
असिंचित	3 एकड़
मोबाईल नं०	9939212112
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	S.H.G & Pran
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	PM-KISAN

सिमडेगा जिला अन्तर्गत पाकरटांड प्रखण्ड के पाकरटांड पंचायत के ठेठईटांगर गाँव की रहने वाली शबनम लकड़ा प्रारंभिक का शिक्षा गाँव के एक स्कूल में हुई पैसे के आभाव में आगे की पढाई नहीं हो सकी तथा शादी भी जल्द हो गई। मेरे परिवार में कुल 6 सदस्य हैं। मेरे पति एक साधारण किसान हैं, जो पूर्व में पारम्परिक विधि से धान एवं सब्जी की खेती करते थे, जिससे किसी तरह एक वर्ष का खाने का हो पाता था, किसी तरह जीवन यापन हो रहा था। मैं अपने प्रखण्ड के आत्मा, कार्यालय में जाकर वहाँ के प्रसार कर्मी से सम्पर्क किया एवं आत्मा द्वारा संचालित विभिन्न कृषक गतिविधि जैसे प्रशिक्षण, परिभ्रमण, गोष्ठी आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण के उपरान्त धान के साथ रबी एवं गरमा में दलहन, तिलहन एवं साग–सब्जी की खेती वैज्ञानिक तरीके से करना शुरु किया, समय–समय पर आत्मा के प्रसार कर्मी हमारे खेतों में आकर हमें तकनीकी ज्ञान देते रहते है। अभी मैं नेनुआ, करैला, कोहड़ा एवं भिन्डी की खेती 2.5 एकड़ में की हूँ। इनके द्वारा मुझे बीज उपचार की दवा, सूक्ष्म पोषक तत्व, जैविक कीटनाशक दवा पूर्ण अनुदान पर प्राप्त हुआ है।

शबनम लकडा द्वारा गरमा मौसम में 1.5 से 2.0 लाख तक तरबूज बेचा गया है। इनकी तरबूज की खेती देखने प्रखण्ड विकास पदाधिकारी भी इनके खेतों में आकर देखा एवं काफी खुशी जाहिर की। आत्मा के प्रसार कर्मी के मार्गदर्शन से सब्जी की खेती में अच्छी आमदनी होने लगी है। इसके साथ–साथ धान की परम्परागत विधि से खेती करती थी परन्तु पिछले खरीफ मौसम से 1.5 से 20 एकड़ में लाइन विधि द्वारा कर रही हूँ। समय–समय पर खेत में आकर फसल का निरीक्षण कर मुझे जानकारी भी देते रहते है। मुझे पूर्ण अनुदान पर कोनोबीडर भी प्राप्त है जिससे खरपतवार निकालना आसान हो गया और धान के पौधे जल्द विकसित होने लगे। धान के अलावा उरद एवं मडुआ भी 50–50 डी० में लगाती हूँ। खेती में अच्छी आमदनी होने से मेरा परिवार भी ठीक ढंग से चल रहा है।

मेरे उत्पादन को देख कर अन्य किसान काफी प्रभावित होकर सब्जी की खेती करने की इच्छा

जाहिर किया है मैनें उन सभी कृषक भाईयों को अपने प्रखण्ड के आत्मा कार्यालय में जाकर प्रसार कर्मियों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।

इसके अतिरिक्त मुझे एक संस्था द्वारा मुर्गी पालन का भी प्रशिक्षण मिला, प्रशिक्षण के उपरांत मुझे 50–50 चूजा पूर्ण अनुदान पर प्राप्त हुआ, अभी मेरे पास 60–70 मूर्गी एवं मुर्गा उपलब्ध है। प्राण संस्था द्वारा जैविक खाद एवं कीटनाशक दवा का भी प्रशिक्षण मैंने प्राप्त किया है एवं प्रशिक्षण के उपरान्त घर पर ही दवा बनाने के लिए सारी सामग्री प्राप्त हुई है, जो मैं थोड़ा बना रही हूँ।

अतः मैं सभी किसान भाईयों को संदेश देना चाहती हूँ कि जो किसान रोजी–रोटी के लिए मजदूरी का कार्य करने के लिए दूसरे राज्यों में जाते हैं, वैसे किसान थोड़ी सी जमीन में भी सब्जी की खेती कर अच्छी आय प्राप्त कर सकते है जिसके लिए उन्हें तकनीकी ज्ञान के लिए अपने प्रखण्ड के आत्मा कार्यालय में प्रसार कर्मी से सम्पर्क स्थापित कर उन्नत तरीके से खेती करने का गुण सीख सकते है।

Crop/Agriculture Practice	Sponge-yourd
Yield of crop/product	52 Qt/Acre
Sale Value	RS 20//kg
Straw	N.A.
Input Cost	RS 6000
Labour Cost	RS 10000
Any other Cost	RS 2000
Net Saving	RS 86000

जलडेगा के किसान की कहानी

किसान का नाम	राजेन्द्र काशी
पिता/पति का नाम	गोर्वधन काशी
ग्राम	टिंगिना
पंचायत	टिंगिना
प्रखण्ड	जलडेगा
जिला	सिमडेगा
जमीन का ब्यौरा	9.2 एकड़
सिंचित	2.45 एकड़
असिंचित	5.35 एकड़
मोबाईल नं०	6203487149
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	Fpo Jaldega
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	Pm-Kisan

जलडेगा प्रखंड अंतर्गत पंचायत के टिंगिना गांव के रहनेवाले राजेंद्र काशी ने स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद खेती–किसानी को रोजगार का साधन चुना, जिसमें आज वे काफी सफल हैं। राजेंद्र जी बताते हैं कि स्नातक की पढ़ाई के बाद उन्होंने कुछ समय रोजगार को लेकर प्रयास किया, लेकिन रोजगार करना ज्यादा रुचि नहीं लगा। इसके बाद उन्होंने सारा ध्यान खेती–किसानी में ही लगाने का निश्चय किया। पढ़ा–लिखा होने पर खेती–किसानी का पेशा चुनना उनके लिए चुनौती से कम न था। इसके बावजूद परिवार रिश्तेदारों को खेती करने की अपनी योजना से उन्होंने प्रभावित किया और दूसरे किसानों को भी नई राह दिखाई। राजेंद्र काशी जी की पुश्तैनी जमीन लगभग आठ एकड़ है। वर्षों से सिर्फ खरीफ मौसम में उनके परिवार वाले धान की खेती किया करते थे, जिससे खाने–पीने की समस्या तो नहीं रहती थी, लेकिन अतिरिक्त आय के लिए उन्हें दूसरे स्रोत पर ध्यान देना पड़ता था। राजेंद्र जी पिछले पांच वर्षों से आत्मा से जुड़े हैं। आत्मा के प्रसार कर्मी द्वारा उन्हें आत्मा द्वारा संचालित विभिन्न कृषक गतिविधि जैसे प्रशिक्षण, परिभ्रमण, गोष्ठी में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके साथ ही धान के साथ–साथ रबी एवं गरमा में दलहन, तिलहन एवं साग–सब्जी की खेती करने का सुझाव दिया। आत्मा ने राजेंद्र जी को खेती में आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया। सब्जी की खेती से 1.5 लाख रूपए से ज्यादा की आमदनी हुई। राजेंद्रजी कहते हैं, आत्मा के प्रसार कर्मी द्वारा समय–समय पर तकनीकी जानकारी एवं मार्गदर्शन मिलने से प्रोत्साहित होकर उन्होंने

Crop/Agriculture Practice	CAULIFLOWER
Yield of crop/product	3.05 MT
Sale Value	10 PER KG
Straw	APP. 350 KG
Input Cost	RS 8000
Labour Cost	RS 12000
Any other Cost	RS 3000
Net Saving	RS 371000

लगभग तीन एकड़ जमीन में गोभी, टमाटर, बैंगन, बीन्स, सरसों, चना एवं गेहूं की उन्नत तकनीक से खेती करना शुरू किया। सब्जी की खेती से उन्हें अच्छा लाभ भी हुआ। विगत वर्ष राजेंद्र जी को 1,50,000 रुपये से ज्यादा की आमदनी सब्जी उत्पादन से हुई, जिससे वे परिवार के लिए अतिरिक्त आमदनी की समस्या को दूर करने में काफी सफल हुए हैं। राजेंद्र जी अपने खेतों में उत्पादित सब्जी को सिमडेगा, जलडेगा, लोमबोई, कोनमेरला, लचरागढ़ में लगने वाले सप्ताहिक हाट में बेचते हैं। इसके साथ ही सिमडेगा शहर के हाट–बाजारों के व्यापारी भी उनके यहां सब्जी खरीदने पहुंचते हैं। राजेंद्र जी कहते हैं किसानों के लिए सरकार कई योजनायें चला रही है जिससे वे लाभ ले सकते हैं। जरूरत है जागरूक होकर इसका लाभ उठाने की। कृषि विभाग के पदाधिकारी व प्रसारकर्मी क्षेत्र में आते हैं तो उनसे संपर्क में रहें। उन्होंने बताया कि योजनाओं का लाभ दिलाने के अलावा भी किसानों के लिए प्रशिक्षण, परिभ्रमण, गोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, जिसमें सम्मिलित होकर उन्नत तरीके से खेती करने का गुण सीख सकते हैं।

जरबेरा की खेती से बदली जिंदगी

किसान का नाम	श्री तेम्बा उरॉव
पिता / पति का नाम	श्री वृहस्पति उरॉव
ग्राम	गणेशपुर
पंचायत	रघुनाथपुर
प्रखण्ड	चान्हो
जिला	रॉची
जमीन का ब्यौरा	6 एकड़
सिंचित	6 एकड़
असिंचित	0 एकड़
मोबाईल नं०	9771897978
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	नहीं
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	2021

चान्हो प्रखण्ड मुख्यालय से करीब 6 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित ग्राम–गणेशपुर है। जहॉ के किसान मुख्यतः धान, गेहूॅ और सब्जी की खेती कर अपना जीवकोपार्जन करते है। इस गॉव के किसान सिर्फ पारम्परिक तरीके से खेती करते हैं।

2020 में आत्मा के द्वारा जिला अन्तर्गत किसान परिभ्रमण का मौका कुछ किसानों को मिला, जिसमें से एक तेम्बा नामक युवा किसान भी अपनी इच्छा दिखाया और परिभ्रमण में अपना समय दिया। एक ऐसे प्रगतिशील किसान के यहॉ भ्रमण का मौका मिला जो जरबेरा फूल की खेती किया था। मन को मोह लेने वाला बगीचा देखकर सभी किसान खुश हुए, लेंकिन तेम्बा ने अपने मन में ठान लिया कि मुझे भी फूल की खेती करनी है। मेरे खेत में भी अन्य किसान आए और प्रशंसा करें उसके बाद उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति को देखकर उद्यान विभाग से सम्पर्क कर उसे संरक्षित फूलों की खेती की योजना का लाभ मिला। Convergence करते हुए 90 प्रतिशत अनुदानित दर से टपक सिंचाई की सुविधा दी गई। समय–समय पर प्रसार कर्मी का तकनीकी सहयोग मिला और फूल की खेती की जानकारी मिला। जब भी त्योहार या लगन का मौसम रहता है तो बाजार मूल्य अच्छा मिलता है फूल की खेती से सालाना 1.50 से 2.00 लाख तक की कमाई हो जाती है।

फूल की खेती कर अपने प्रखण्ड में एक अलग पहचान विभाग के द्वार मिला जो भुलाया नहीं जा सकेगा। खेती की नई तकनीक और मुनाफा के वजह से अपने बच्चों को रॉंची जैसे मंहगे शहर के English Medium विद्यालय में पढ़ा रहे हैं।

यदि आज आत्मा द्वारा संचालित क्रियाविधि से नहीं जुड़ते तो ऐसे तकनीक और फायदे से वंचित रह जाते और अपनी पुरानी मनोवृत्ति से खेती करते रह जाते।

कृषक पाठशाला ने सिखाई ब्रोकली की खेती

किसान का नाम	विश्वनाथ महतो
पिता/पति का नाम	स्व श्री सकलनाथ महतो
ग्राम	लुपुंग
पंचायत	लुपुंग
प्रखण्ड	अनगड़ा,
जिला	रांची
जमीन का ब्यौरा	4.30 एकड
सिंचित	2.90 एकड
असिंचित	2.40 एकड
मोबाईल नं०	8709299022
क्या आप SHG / Producers Cooperative /Company, Cooperative Society etc के सदस्य हैं	नहीं
किसान किस योजना (Central Sector/State Scheme) के तहत् तथा किस वर्ष लाभ प्राप्त किये हैं।	ब्रोकली पर कृषक पाठशाला का आयोजन

मैं विश्वनाथ महतो पिता स्वर्गीय श्री सकलनाथ महतो ग्राम-पंचायत लुपुंग में प्रखंड अनगड़ा, जिला रांची का स्थाई निवासी हूं। मेरा जन्म 4 मार्च 1968 को हुआ था। मैं अपने पांच भाई बहनों में सबसे बड़ा था। मेरे ऊपर पारिवारिक जिम्मेदारी ज्यादा थी। 1984 में मैं मैट्रिक का परीक्षा पास किया। उसके बाद में 1991 में मारवाड़ी कॉलेज रांची से स्नातक की परीक्षा पास की।

पारिवारिक परिस्थितियों के वजह से मैं कहीं बाहर नौकरी में नहीं जा सका। मैं गांव में खीरा की खेती-बाड़ी करता था और इसी से मैं अपना जीवकोपार्जन करता था तथा मैं अपने बच्चों का पढ़ाई लिखाई परवरिश करता था।

मेरे पास मेरा खुद का 5:30 एकड़ जमीन है जिस पर मैं खेती करता हूं मेरा पारिवारिक स्थिति बहुत सुदृढ़ नहीं होने के कारण मैं आर्थिक तंगी से जूझता रहा। वर्ष 2014-15 में प्रखंड में हमारी मुलाकात प्रखंड तकनीकी प्रबंधक अंजीव कुमार श्रीवास्तव से हुई और उनके साथ मुझे आत्मा द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार की प्रशिक्षण में भेजा गया।

मेरी खेती के प्रति रूचि व मेहनत को देखते हुए वर्ष 2019-20 में प्रखंड तकनीकी प्रबंधक के द्वारा मेरे क्षेत्र पर ब्रोकली की उन्नत खेती से संबंधित कृषक पाठशाला का आयोजन किया गया। उक्त पाठशाला में रांची से कृषि विशेषज्ञ के द्वारा कृषक पाठशाला में उपस्थित सभी सदस्यों को ब्रोकली से संबंधित बीज उपचार से लेकर कटाई एवं विपणन तक सारी कक्षाएं चलाई गई तथा उसमें विस्तार पूर्वक बताया गया।

ब्रोकली के तरफ पहले मेरा रुझान नहीं था लेकिन पाठशाला संचालित होने के कारण में तकनीकी रूप से पूरा बुवाई किया, तो मेरा उपज बहुत बढ़िया हुआ और मैं लगातार उसकी कटाई करके मैं 140375 .00 शुद्ध आय प्राप्त किया। उसके बाद से ब्रोकली की खेती के साथ-साथ अन्य सब्जियों की खेती करता हूं और मुझे बड़ी खुशी हुई की आत्मा के तरफ से मुझे जुड़कर मेरा आर्थिक सुधार हुआ तथा जीविकोपार्जन बहुत बढ़िया से कर रहा हूँ।

इस पुनीत कार्य के लिए मैं परियोजना निदेशक, उप परियोजना निदेशक आत्मा एवं प्रखंड तकनीकी प्रबंधक को हृदय से धन्यवाद देता हूं।

फसल / सब्जी का नाम	ब्रोकली
प्रभेद का नाम	"Saki" Hyb Broccoli
उत्पादन	48.50Qt
बिक्रय मूल्य	169750
लागत मूल्य	29200.00
शुद्ध आय	140550.00

किसान कॉल सेंटर

1800-123-1136

(सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक)

मुख्यमंत्री किसान सहयोग कोषांग

0651-2490542 / 0651-2491642

(सुबह 7 बजे से शाम 7 बजे तक)

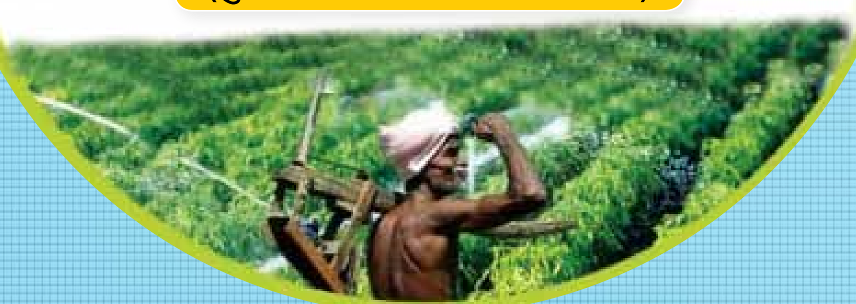

संपादक मण्डल

मुख्य संपादक	:	श्री विकास कुमार, निदेशक, समेति, झारखण्ड
सह संपादक	:	श्री अभिषेक तिर्की, उप निदेशक (कृ०प्र०प्र०), समेति, झारखण्ड
		कुमुद कुमारी, उप निदेशक, (कृषि एवं संबद्ध) समेति झारखण्ड
सहयोग एवं संकलन	:	श्रीमति बिन्दु कुजूर, प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, कांके, राँची
		श्री संधीर खालखो, प्रखंड तकनीकी प्रबंधक, पुर्वी सिंहभूम
टंकन एवं साज-सज्जा	:	श्री परशु राम, कम्प्यूटर ऑपरेटर, समेति, झारखण्ड
आभार	:	आत्मा चतरा, देवघर, धानबाद, दुमका, पुर्वी सिंहभुम, गढ़वा, गिरीडीह, लातेहार, लोहरदगा, रामगढ़ पलामु, साहेबगंज, सिमडेगा, राँची

Annapurnaprinters.rnc@gmail.com • 9835778101